Bal Bharati
PUBLIC SCHOOL
ROHINI
December 2024 Volume VIII issue V

संस्कृत हिन्दी ई-पत्रिका

स्वरांजलि

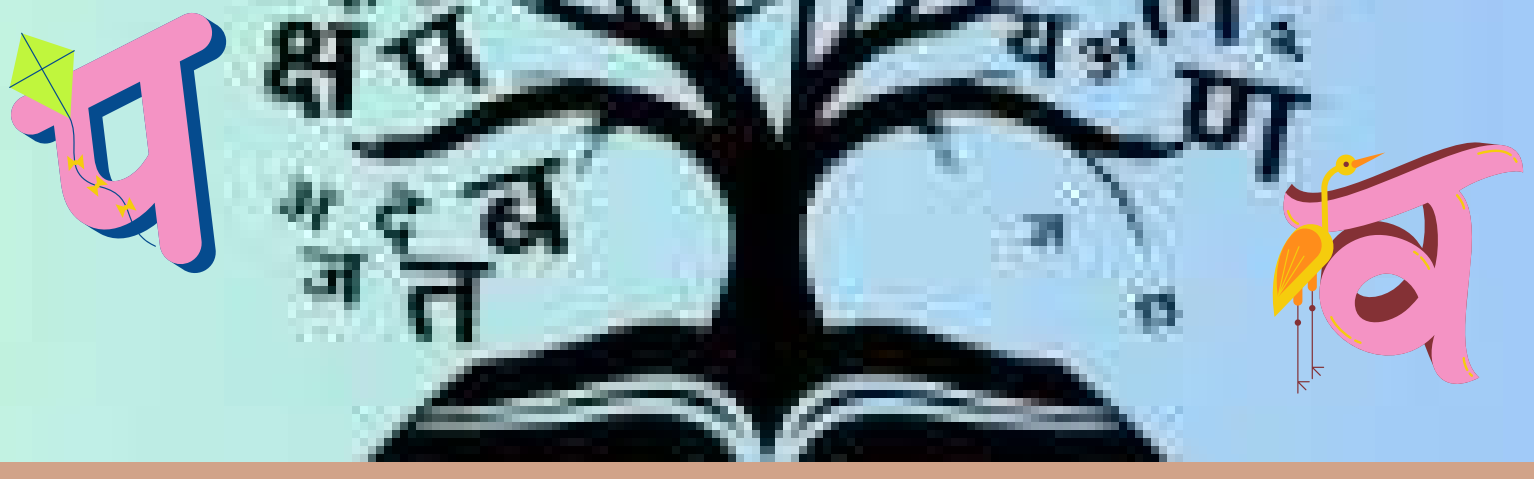

प्रधानाचार्या की कलम से

“एक शिक्षित मन ही एक विकसित राष्ट्र का निर्माण कर सकता है।”

-ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

हिंदी हैं हम
हिंदी हैं हम
वतन है
यह गुलिस्तां हमारा हमारा।

उपरोक्त पंक्तियाँ हिंदी भाषा के महत्त्व को हमारे देश में उजागर करने के लिए पर्याप्त प्रमाण हैं। हमारे लिए हिंदी सिर्फ भारत की एक राजभाषा नहीं है, बल्कि यह हमारी सभी भावनाओं की अभिव्यक्ति है। यह भाषा अपनी विशिष्ट शब्दावली से हमें परिभाषित करती है और अपने सहज, स्वाभाविक और स्पष्ट उपयोग से हमें सांत्वना देती है। मातृभाषा के रूप में इसका महत्त्व व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है और इसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के तहत प्रोत्साहित किया गया है। हिंदी, अन्य भारतीय भाषाओं के साथ, बहुभाषावाद को बढ़ावा देने और भारत की समृद्ध भाषायी विविधता को संरक्षित करने की व्यापक दृष्टि का हिस्सा है। यह भाषा, जो दुनिया की सबसे पुरानी भाषाओं में से एक है, अरबी और यूरोपीय भाषाओं के शब्दों के मिश्रण के साथ विक.सित हुई है, जबकि यह अधिकांश भाषाओं के लिए मौलिक योगदानकर्ता रही है। बी.बी.पी.एस आर.एच. ने एन.ई.पी की वकालत और भाषा के मूल्यों का उत्सव मनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। हिंदी दिवस के उत्सव के साथ-साथ संस्कृत दिवस का आयोजन विद्यालय के इस प्रयास को दर्शाता है कि हमारे सांस्कृतिक भाषायी धरोहर का महत्त्व पुनर्जीवित किया जाए। इस क्षेत्र के लिए ये दोनों भाषाएँ उस विरासत का प्रतीक हैं, जो वे साथ लेकर चलती हैं। विद्यालय की फैकल्टी और विद्यार्थियों के प्रयास, हिंदी प्रदर्शनी के आयोजन, हमारे हितधारकों के रचनात्मक योगदान का संग्रह और आधुनिक कक्षा में थिएटर के महत्व को प्रदर्शित करने वाले संस्कृत आधारित क्रियात्मक शोध प्रोजेक्ट, मातृभाषा के जादू को पुनर्जीवित करने के लिए विद्यालय के शैक्षणिक प्रयासों में से कुछ हैं। पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं के भाषाई कोनों में बच्चों को शब्दों की दुनिया का पहला परिचय कराया जाता है, जो उन्हें इतनी क्षमता प्रदान करता है कि वे अपने विचारों को सोचने, बनाने और अपनी पसंद की भाषा में व्यक्त कर सकें। इस ऑनलाइन संस्करण के न्यूज़लेटर स्वरांजलि के माध्यम से, हम आपके लिए हमारे दैनिक प्रयासों की एक झलक लेकर आए हैं, जो पाठ्यक्रम और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सहजता से बुने गए हैं। ये गतिविधियाँ हमारे छात्रों की भाषायी क्षमताओं को निखारती हैं और हमारी भूमि की भाषायी विविधता के आकर्षण को बनाए रखती हैं।

श्रीमती गीता गंगवानी

उपप्रधानाचार्या की कलम से

“हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैर पर खड़ा हो सके।”

-स्वामी विवेकानन्द

स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते

शिक्षित व्यक्ति अपने व्यवहार आचरण , भाषा व्यक्तित्व से सर्वत्र आदरणीय पूजनीय होता है परंतु यदि हम विगत कुछ दशकों पर नजर डालें तो उच्च शिक्षा प्राप्त, विषय और क्षेत्र विशेष में पारगंता प्राप्त कर लेने पर भी जरूरी नहीं कि व्यक्ति उपरोक्त मान सम्मान पाए तथा शिक्षित एवं विद्वान व्यक्तियों का भी असामाजिक गतिविधियों एवं राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में सम्मिलित होना इस बात को दर्शाता है कि हमारी शिक्षा किसी न किसी मूल्यों से वंचित है जिसके कारण सब प्रकार से संपन्न होने पर भी असंतोष, स्वार्थ और आत्मकेंद्रिता बढ़ती जा रही है। पश्चिमी सोच एवं भौतिकवादी युग की आवश्यकताओं ने वास्तव में शिक्षा को केवल धनार्जन एवं आजाविका अर्जन का साधन बना दिया है और शिक्षा के मानवीय एवं जीवन मूल्य पीछे छूट गए। जबकि नैतिकता और जीवन मूल्य ही छात्रों को सही दृष्टिकोण के साथ बाहरी दुनिया के लिए तैयार करते हैं। मूल्य आधारित शिक्षा : छात्रों के समग्र विकास की वह प्रक्रिया है जिसमें चरित्र विकास, व्यक्तित्व विकास, नागरिक विकास एवं आध्यात्मिक विकास शामिल होता है। पहले यह शिक्षा घर-परिवार में दादी नानी एवं अन्य बुजुर्गो द्वारा दी जाती थी परन्तु आधुनिक एकल परिवार पद्धति के कारण,यंत्रवत् जीवन एवं माता-पिता दोनों के कार्यरत होने पर बच्चे इस सौभाग्य से वंचित रह जाते हैं। अब हमारे पास नैतिक जीवन मूल्यों को वर्तमान एवं आने वाली पीढी में विकसित करने का एकमात्र विकल्प है - विद्यालय एवं शिक्षक । जिसके चलते यह पूर्ण दायित्व शिक्षण संस्थाओं के कंधों पर आ गया हैं। यद्यपि विद्यालय अकादमिक एवं सहगार्म क्रियाओं के माध्यम से यह भूमिका से बखूबी निभाता रहा है। भाषा में तो नैतिक, आध्यात्मिक एवं जीवन मूल्यों के विकास के बहुत अवसर होते हैं परंतु भाषा के साथ साथ अब अन्य सभी विषयों को भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ेगी शिक्षा तब तक परिपूर्ण नहीं होती है जब तक उसमें मानव कल्याण की भावना न हो।विज्ञान की शिक्षा तथ्यों के साथ-साथ व्यक्ति को जीवन की सभी प्रकार की गणनाओं की सीख दे उन्हें जीवन में अच्छा बुरा जमा - घटा सिखाए जिससे उनका जीवन सुखद रहे, इसी प्रकार इतिहास, भूगोल आदि अन्य सभी विषयों को भी जीवन मूल्यांक नैतिक मूल्यों एवं मानवीय मूल्यों को ऐसे लपेट कर पढ़ाया जाए, ताकि छात्रों में सुनागरिक के गुण अपने आप आ जाए | हमें अपने विषयों में ही मूल्य शिक्षा का समावेश करना पड़ेगा ।

श्रीमती बंधना शर्मा

प्रधानाध्यापिका की कलम से

“हमने स्कूल में जो सीखा है वह सब भूलने के बाद जो याद रहता है, वही शिक्षा है
ज्ञान का निवेश सर्वोत्तम भुगतान करता है।”

-बेंजामिन फ्रेंक्लिन

संस्कृति और भाषा का अटूट रिश्ता

संस्कृति और भाषा का संबंध अत्यंत गहरा और अटूट है । दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं और एक समाज की पहचान और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । संस्कृति किसी भी समाज की रीति-रिवाज, परंपराएँ, कला और जीवनशैली का समग्र स्वरूप है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती है और समाज के मूल्यों और विश्वासों को दर्शाती है । भाषा इस संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है । जब हम किसी संस्कृति की बात करते हैं, तो उसकी कहानियाँ, गीत, साहित्य, और धार्मिक ग्रंथ भाषा के माध्यम से ही जीवित रहते हैं । एक बार की बात है, हिमालय की गोद में बसे एक छोटे से गाँव में एक दादी अम्मा रहती थीं। दादी अम्मा को गाँव के सभी लोग बहुत मानते थे क्योंकि उनके पास ज्ञान का भंडार था। वे अक्सर बच्चों को अपनी कहानियों के माध्यम से जीवन के मूल्य सिखाया करती थीं। एक दिन गाँव के कुछ बच्चे उनके पास आए और कहा, दादी अम्मा, हमें संस्कृति और भाषा का क्या संबंध होता है, यह समझाइए दादी अम्मा ने मुस्कुराते हुए कहा, - बच्चों, चलो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाती हूँ। बहुत समय पहले की बात है, एक पक्षी था जिसका नाम संस्कृति था और उसकी एक साथी थी भाषा वे दोनों हमेशा साथ रहते थे। जब भी संस्कृति कोई नृत्य करती या गाना गाती, भाषा उसे शब्दों में पिरो देती। एक दिन भाषा ने सोचा कि वह अकेले उड़ान भरेगी। उसने अपने पंख फैलाए और आसमान में उड़ चली । लेकिन उसने देखा कि बिना संस्कृति के उसके गीतों में वो मिठास नहीं रही। वह लौटकर संस्कृति के पास आई और कहा, मुझे तुम्हारी ज़रूरत है। तुम्हारे बिना मेरे गीत अधूरे हैं। तब से वे दोनों कभी अलग नहीं हुए । दादी अम्मा ने समझाया, बच्चों! हमारी संस्कृति और भाषा का रिश्ता भी ऐसा ही है। भाषा हमारी संस्कृति को व्यक्त करने का माध्यम है। जब तक हम अपनी भाषा को जीवित रखेंगे, हमारी संस्कृति भी जीवित रहेगी। इस प्रकार दादी अम्मा ने सरल शब्दों में बच्चों को महत्वपूर्ण शिक्षा दी कि भाषा और संस्कृति का मेल हमारे जीवन को समृद्ध बनाता है । अगर हमें अपनी संस्कृति को बचाना है तो अपनी भाषा का आदर और सम्मान करना होगा|

श्रीमती अलका चड्ढा
एच.एम प्राइमरी विभाग

"शिक्षा हमारे भविष्य की नींव है, जिसे हमें मजबूती से निर्माण करना चाहिए"

-नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा के प्रारंभिक स्तर पर अत्यधिक महत्वपूर्ण मानती है। NEP 2020 का मानना है कि शुरुआती वर्षों में बच्चों को अपनी भाषा में शिक्षा देने से उनकी नींव मजबूत होगी और भविष्य में वे अन्य भाषाओं और विषयों को भी बेहतर तरीके से समझ सकेंगे । बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा उनकी मातृभाषा या घरेलू भाषा में होनी चाहिए क्योंकि यह उनकी समझ, सीखने की क्षमता और सोचने के कौशल को बेहतर बनाती है। NEP के अनुसार, बच्चे अपनी मातृभाषा में सहजता महसूस करते हैं, जिससे उनकी सीखने की प्रक्रिया सहजता और प्रभावी हो जाती है। नीति कहती है कि जहां संभव हो, कम से कम कक्षा 5 तक और यदि संभव हो, तो कक्षा 8 तक मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाए रखा जाए। मातृभाषा में शिक्षा बच्चों को अपनी संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों से जोड़ने में मदद करती है। मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा बच्चों के संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को प्रोत्साहित करती है।

श्रीमती अंजना
प्रधानाध्यपिका प्री प्राइमरी विभाग

"हम राष्ट नहीं बनाते है, हम लोग बनाते है उन्हें शिक्षित करें और राष्ट्र अपने आप बन जाएगा।"

-ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

"यह महत्वपूर्ण नहीं हैं कि आप क्या देखते हैं, बल्कि यह है कि आप क्या समझते हैं।"

-हेनरी डेविड थोरो

बहुभाषीय शिक्षा का महत्व"

*नेल्सन मंडेला के अनुसार "भाषाएँ केवल संवाद का साधन नहीं हैं, वे संस्कृतियों का दिल भी हैं।" जब कोई व्यक्ति या समाज एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान रखता है और उनका उपयोग करता है, तो उसे बहुभाषावाद कहते हैं। भारत एक बहुभाषी देश है, जहाँ विभिन्न भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। *फ्रैंकोइस डी ला रोशेफूको* के अनुसार एक नई भाषा का ज्ञान, एक नए जीवन के दरवाजे खोलता है।"बहुभाषी शिक्षा का अर्थ है एक से अधिक भाषाओं में शिक्षा देना।यह शिक्षा प्रणाली न केवल भाषायी विविधता का अपितु मातृभाषा का भी संरक्षण करती है। और छात्रों को बहु-सांस्कृतिक समझ और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा में सक्षम बनाती है। बहुभाषीय शिक्षा का भविष्य उज्ज्वल और संभावनाओं से परिपूर्ण है। आज के युग में, जब वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति ने दुनिया को एक वैश्विक गांव बना दिया है, बहुभाषी शिक्षा का महत्त्व और भी बढ़ गया है। मातृभाषा से आरंभ होकर बहुभाषा की यह यात्रा न केवल छात्रों में आत्मविश्वास का संचार करती है, बल्कि उन्हें अलग-अलग संस्कृतियों और परंपराओं को समझने में भी सहायक होती है। बहुभाषी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह आपसी मेलजोल और प्रेम को बढ़ावा देती है। जब बच्चे विभिन्न भाषाओं का अध्ययन करते हैं, तो वे उन भाषाओं के माध्यम से अन्य समुदायों की संस्कृति और विचारधारा को समझने लगते हैं। जिसमें मातृभाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।इससे समाज में सामंजस्य और भाईचारे की भावना उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त, बहुभाषी शिक्षा रोजगार के अवसरों को भी व्यापक बनाती है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक दौर में, कम्पनियाँ उन उम्मीदवारों को प्राथमिकता देती हैं जो एक से अधिक भाषाओं में दक्ष हैं। मातृभाषा से मिली दक्षता और कार्यकुशलता और बहुभाषी शिक्षा उन्हें वैश्विक स्तर पर अवसर प्राप्त करने में भी मदद करती है। विदेशों में पहचान और सम्मान अर्जित करने में भी बहुभाषी शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। जब व्यक्ति किसी विदेशी भाषा में निपुण होता है, तो उसे विदेशी संस्थानों और समाज में अधिक स्वीकार्यता और सम्मान प्राप्त होता है। अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मातृभाषा में छात्रों के विचार पल्लवित होते हैं, अपने आत्मसम्मान और आत्मविश्वास से बहुभाषी शिक्षा की यात्रा न केवल व्यक्तिगत विकास में सहायक है, बल्कि यह समाज और देश के विकास के लिए भी अनिवार्य है। इसका समुचित विकास आने वाली पीढ़ियों को एक सशक्त और समृद्ध भविष्य प्रदान करेगा।

श्रीमती सरिता चौहान
चीफ कोऑर्डिनेटर मिडल विभाग

भाषा जो आत्मा की अभिव्यक्ति है

संस्कृत हास्य लिपि

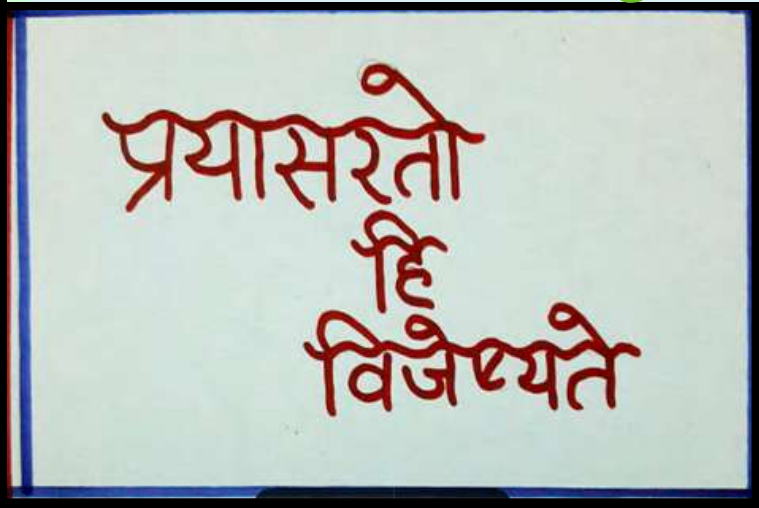

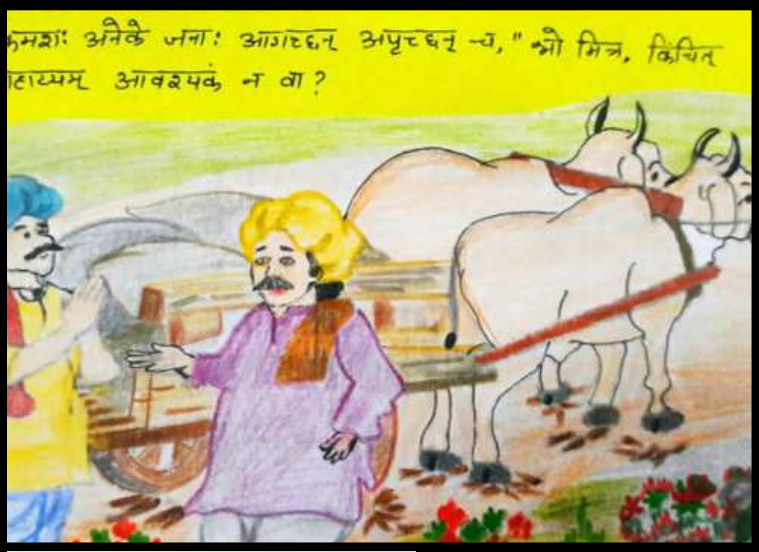

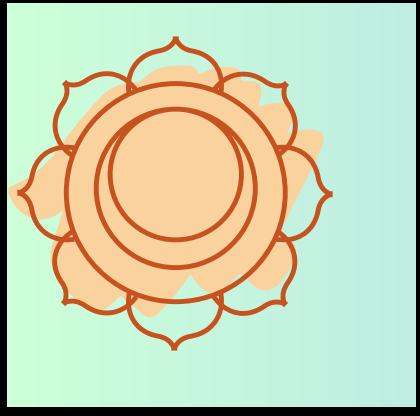

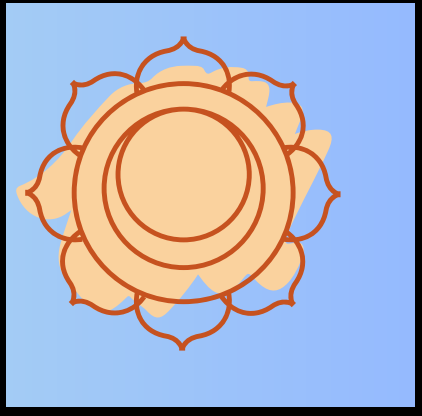

श्रीमती मंजू माहरा
संस्कृत अध्यापिका

“सकल भूमण्डल की सर्वप्राचीना, शुद्धतमा, समृद्धा, लिपिबद्धा एवं वैज्ञानिकी भाषा - संस्कृत भाषा।”

“वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये। जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ॥”

अर्थात् : वाणी और अर्थ जिस प्रकार आपस में जुड़े हुए हैं, उसी प्रकार संस्कृत भाषा ज्ञान और भावनाओं को जोड़ती है। संस्कृत एक हिंद-आर्य भाषा है जो हिंद-यूरोपीय/भारोपीय भाषा परिवार की एक शाखा है,जिसे देव-वाणी कहते हैं। यह विश्व की अनेक भाषाओं की जननी है। देश, काल और विविधता की दृष्टि से संस्कृतसाहित्य मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया जाता है- वैदिक साहित्य तथा लौकिक साहित्य। आधुनिक आर्यभाषा परिवार की भाषाएं - हिंदी, बांग्ला, असमिया, मराठी, सिंधी, पंजाबी, नेपाली आदि इसी से विकसित तो हुई ही हैं, दक्षिण भारत की तेलुगु, कन्नड़ एवं मलयालम भाषाओं की लगभग 80% शब्दावली संस्कृत से आई है। संस्कृत में न केवल प्राचीन धार्मिक ग्रंथ लिखित हैं, बल्कि इसमें साहित्य, संस्कृति व ज्ञान-विज्ञान परक लगभग तीन करोड़ पांडुलिपियां मौजूद हैं। यह संख्या ग्रीक और लैटिन की पांडुलिपियों की कुल संख्या के सौ गुना से भी ज्यादा है। अवेस्ता (प्राचीन इरानी) में बहुत समानता है। भारत के पड़ोसी देशों की भाषाएँ सिंहल, नेपाली, म्यांमार भाषा, थाई भाषा, ख्मेर संस्कृत से प्रभावित हैं। ऑक्सफोर्ड, कैंब्रिज और हार्वर्ड जैसे विश्वविद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जाती है। बौद्ध धर्म का चीन में जैसे-जैसे प्रसार हुआ वैसे वैसे सैकड़ों संस्कृत ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद हुआ। इससे संस्कृत के हज़ारों शब्द चीनी भाषा में गए। उत्तरी-पश्चिमी तिब्बत में तो आज से 1000 वर्ष पहले तक संस्कृत की संस्कृति थी और वहाँ गान्धारी भाषा का प्रचलन था। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) का एक महत्वपूर्ण बिंदु है : भारतीय संस्कृति की महान परंपराओं और विरासत को सहेजना। इस उद्देश्य की सबसे बड़ी वाहिका है भारतीय संविधान के आठवें अनुच्छेद में उल्लिखित भाषा संस्कृत। बाबासाहेब आंबेडकर का मानना था कि संस्कृत पूरे भारत को भाषाई एकता के सूत्र में बांध सकने में सक्षम होगी। यह उत्तराखण्ड और हिमाचल प्रदेश की आधिकारिक राजभाषाहै। संस्कृत एक तरफ हमें प्राचीन जड़ों से जोड़ती है तो दूसरी तरफ इसमें समकालीन और भविष्य की जरूरतों को भी साकार करने की संभावना है। आज संस्कृत का ज्ञान इसलिए भी जरूरी है कि प्राचीन भारतीय ज्ञान- ज्ञान जैसे आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, योगसूत्र, निर्माण- कला अथवा वैदिक गणित और अर्थशास्त्र आदि के साथ-साथ भारतीय संस्कृति का प्रामाणिक रूप सामने आ सके। पिछले दिनों गूगल ने संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म बनाने की घोषणा की है। इसकी व्याकरणीय संरचना इसे भविष्य की प्रौद्योगिकी, कंप्यूटर प्रोग्रामिंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) में उपयोगी बनाती है। अमेरिकी अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (NASA) ने संस्कृत को “कंप्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त भाषा” माना। संस्कृत भाषा का अध्ययन और प्रचार न केवल हमारी परंपरा को जीवित रखता है, बल्कि विश्व-ज्ञान को समृद्ध भी करता है। केवल न व्यंजन प्रयोग द्वारा रचित यह अद्भुत श्लोक मानवजाति हेतु आदर्श-चरित्र को दर्शाने वाला एक अप्रतिम उदाहरण है - “न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नाना नना ननु। नुन्नोऽनुन्नो ननुन्नेनो नानेना नन्नुनन्नुनुत्।।” अर्थात् जो मनुष्य युद्ध में अपने से दुर्बल मनुष्य के हाथों घायल हुआ है वह सच्चा मनुष्य नहीं है। ऐसे ही अपने से दुर्बल को घायल करता है वो भी मनुष्य नहीं है। घायल मनुष्य का स्वामी यदि घायल न हुआ हो तो ऐसे मनुष्य को घायल नहीं कहते और घायल मनुष्य को घायल करें वो भी मनुष्य नहीं है। संस्कृत भाषा का प्रचार-प्रसार हमारे सांस्कृतिक गौरव को बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण कदम है। इसे विद्यालय में सम्मानपूर्वक अपनाना, न केवल एक परंपरा का संरक्षण है, बल्कि विद्यार्थियों को एक अद्वितीय और उपयोगी भाषा व संस्कृति से परिचित कराना भी है।

संस्कृत: हिंदी की जननी

एन.ई.पी. 2020 संस्कृत का महत्व

नवीन शिक्षा नीति (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020) में संस्कृत का विशेष स्थान दिया गया है। यह नीति भारतीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन पर जोर देती है, जिसमें संस्कृत को एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में मान्यता दी गई है। इसके मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

सर्वांगीण अध्ययन के लिए संस्कृत: संस्कृत को आधुनिक और पारंपरिक दोनों दृष्टिकोणों से पढ़ाने पर बल दिया गया है, ताकि यह भाषा केवल धार्मिक या प्राचीन ग्रंथों तक सीमित न रहे, बल्कि अन्य विषयों के अध्ययन में भी सहायक बने।

सभी स्तरों पर शिक्षण: संस्कृत को विद्यालयी शिक्षा के साथ-साथ उच्च शिक्षा में भी पढ़ाया जाएगा। इसे तीन-भाषा सूत्र के अंतर्गत एक वैकल्पिक भाषा के रूप में चुना जा सकता है। बहुभाषी दृष्टिकोण: संस्कृत के साथ अन्य भारतीय भाषाओं का भी संरक्षण होगा, और इसे एक जीवंत भाषा के रूप में पढ़ाया जाएगा। संस्कृत विश्वविद्यालयों का विकास: संस्कृत के अध्ययन और शोध को प्रोत्साहित करने के लिए संस्कृत विश्वविद्यालयों को बहुविषयी संस्थानों के रूप में परिवर्तित किया जाएगा। शिक्षक प्रशिक्षण: संस्कृत के शिक्षकों के प्रशिक्षण पर ध्यान दिया जाएगा, ताकि वे छात्रों को रुचिकर और व्यावहारिक रूप से भाषा सिखा सकें। इस प्रकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में संस्कृत को भाषा, संस्कृति और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में विशेष महत्व दिया गया है।

मातृ भाषा में शिक्षा: अवसर और चुनौतियाँ

"मातृ भाषा में शिक्षा" एक ऐसा विषय है जो शिक्षा के क्षेत्र में गहन विचार-विमर्श का विषय रहा है। मातृ भाषा वह भाषा होती है जिसे कोई व्यक्ति जन्म से ही सीखता है और जिसके माध्यम से वह अपने परिवेश से परिचित होता है । शिक्षा में मातृ भाषा के उपयोग के कई लाभ हैं, लेकिन इसके साथ ही कुछ चुनौतियाँ भी हैं जिन्हें समझना आवश्यक है। मातृ भाषा में शिक्षा प्राप्त करने से बच्चों को विषयों की गहरी समझ विकसित करने में मदद मिलती है। वे अपनी भाषा में प्रश्न पूछने और उत्तर देने में अधिक सहज महसूस करते हैं, जिससे उनकी सीखने की प्रक्रिया में सुधार होता है । मातृ भाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने से विद्यार्थी अपनी संस्कृति और परंपरा के प्रति अधिक जागरूक होते हैं । मातृ भाषा में सोचने और समझने की क्षमता अधिक होती है, जो बच्चों के बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करती है। वे अपनी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बेहतर ढंग से व्यक्त कर पाते हैं । अगर शिक्षा मातृ भाषा में दी जाए तो अधिकाधिक लोग शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित होते हैं, खासकर ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में जहाँ विदेशी भाषाओं का ज्ञान सीमित होता है । मातृ भाषा में शिक्षण सामग्री और संसाधनों की कमी एक बड़ा मुद्दा है । कई भाषाओं में पाठ्यपुस्तकों, शिक्षण सामग्री और प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता नहीं होती । वैश्विक बाजार में अंग्रेजी और अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं का महत्त्व अधिक होने के कारण, केवल मातृ भाषा में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को करियर के अवसरों में सीमितताओं का सामना करना पड़ सकता है। कई समाजों में मातृ भाषा को लेकर नकारात्मक दृष्टिकोण होता है। इसे पिछड़ेपन या ग्रामीण परिवेश से जोड़कर देखा जाता है, जो मातृ भाषा में शिक्षा को अपनाने में बाधा उत्पन्न कर सकता है। ऐसे समाज जहां कई भाषाएँ बोली जाती हैं, वहां एकल मातृ भाषा में शिक्षा लागू करना कठिन हो सकता है । मातृ भाषा में शिक्षा अपने आप में एक सशक्त माध्यम है जो विद्यार्थियों को उनकी जड़ों से जोड़ने और उनके व्यक्तित्व के समग्र विकास में सहायता करता है। हालाँकि, इसे प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए सरकारों, शिक्षाविदों और समाज को मिलकर प्रयास करना होगा ताकि चुनौतियों को अवसरों में परिवर्तित किया जा सके। इसके लिए एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है जिसमें मातृ भाषा के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय भाषाओं का भी समावेश हो ।

श्रीमती सुनंदा वशिष्ट
(हिंदी अध्यापिका)

"शिक्षा भविष्य का पासपोर्ट है, क्योंकि कल उन्हीं का है जो आज इसकी तैयारी करते हैं।"

-मैल्कम एक्स

मोंटेसरी पद्धति द्वारा हिंदी भाषा का विकास

हिंदी भाषा प्री-स्कूल में बच्चों के मानसिक, सामाजिक और भाषायी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह बच्चों को
अपनी मातृभाषा के माध्यम से दुनिया को समझने, संवाद स्थापित करने, और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने में मदद
करती है।
प्रीस्कूल में हिंदी भाषा बच्चों के भाषायी विकास करने में मजबूत नींव प्रदान करती है। जब बच्चे अपनी मातृभाषा या स्थानीय भाषा में संवाद करते हैं, तो उनकी शब्दावली और वाक्य संरचना मजबूत होती है। इसके माध्यम से वे भाषा के मूलभूत पहलुओं, जैसे ध्वनियों,शब्दों और वाक्यों को समझते हैं।

बाल भारती पब्लिक स्कूल में पढ़ाने का तरीका मॉन्टेसरी उपकरणों पर आधारित है। इस पद्धति के तहत बच्चे अपने वातावरण में स्वतंत्र रूप से सीखते हैं और खुद ही चीजों को समझते हैं, जो उनकी मानसिक और शारीरिक विकास में मदद करता है। यह पद्धति दशकों से इस स्कूल में अपनाई जा रही है, जिससे बच्चों को अधिक आत्मनिर्भर और रचनात्मक बनने में सहायता मिलती है। इसमें बच्चों को शब्दों, ध्वनियों और अक्षरों से परिचित कराने के लिए विभिन्न गतिविधियाँ की जाती हैं, ताकि वे भाषा को समझें और उसमें रुचि विकसित करें।

स्वरों और व्यंजनों से परिचय (Introduction to Vowels and Consonants): प्री-स्कूल में बच्चों को स्वरों (vowels) और व्यंजनों (consonants) से परिचित कराने के लिए सैंड पेपर लेटर्स (रेत वाले अक्षर) का उपयोग एक प्रभावी तरीका है। इस गतिविधि में, अक्षरों को रेत या उभरी हुई बनावट में एक बोर्ड पर बनाया जाता है, ताकि बच्चे उन्हें उंगलियों से छूकर महसूस कर सकें।
मौखिक ध्वनि विश्लेषण से परिचय (Introduction to Oral Phonetic Sound)
बच्चों को ध्वनियों की पहचान करना और शब्दों को उनके ध्वनिक घटकों में विभाजित करना सिखाने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। इस प्रक्रिया में बच्चों को विभिन्न ध्वनियों (फोनेटिक्स) के प्रति संवेदनशील बनाने पर ध्यान दिया जाता है, ताकि वे शब्दों के उच्चारण और उनकी ध्वनि संरचना को समझ सकें।

मूवेबल लेटर्स से परिचय (Movable Letters): प्री-स्कूल मूवेबल लेटर्स बच्चों को अक्षरों से परिचित कराने और सरल शब्द निर्माण की नींव डालने का एक प्रभावी तरीका है। मूवेबल लेटर्स में अलग-अलग अक्षर कटआउट्स के रूप में होते हैं जिन्हें बच्चे छू सकते हैं, हिला सकते हैं और जोड़कर शब्द बना सकते हैं। इस गतिविधि में बच्चे स्वतंत्र रूप से अक्षरों को मिलाकर नए शब्द बनाने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए, क म और ल अक्षरों को मिलाकर कमल शब्द बना सकते हैं। यह क्रिया बच्चों में भाषा के प्रति रुचि और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करती है। मूवेबल लेटर्स बच्चों को अक्षरों की पहचान करने, उनके क्रम को समझने, और सरल शब्द बनाने का कौशल सिखाते हैं। यह पद्धति बच्चों के स्पर्श, दृष्टि, और मानसिक विकास को भी बढ़ावा देती है, जो उनके भाषा कौशल को मज़बूत करने में सहायक होती है।

मात्राओं से परिचय (Introduction to Matras): प्री-स्कूल में मात्रा बॉक्स का उपयोग बच्चों को हिंदी भाषा की मात्राओं से परिचित कराने और उनका सही ढंग से प्रयोग करना सिखाने के लिए किया जाता है। मात्राओं का सही ज्ञान बच्चों के भाषा विकास में बहुत महत्वपूर्ण है कि यह शब्दों के उच्चारण और अर्थ को प्रभावित करता है। मात्रा बॉक्स में अलग-अलग अक्षरों और उनके साथ लगने वाली विभिन्न मात्राओं के कटआउट्स होते हैं। इस गतिविधि में बच्चों को स्वर, व्यंजन और उनकी मात्राओं को मिलाकर नए शब्द बनाने का अभ्यास कराया जाता है। उदाहरण के लिए, क में; की मात्रा जोड़ने पर का बनता है। इस प्रकार, बच्चे आसानी से समझते हैं कि हर मात्रा कैसे अक्षरों के उच्चारण और अर्थ को बदल सकती है। यह गतिविधि बच्चों में अक्षर और मात्रा पहचानने की क्षमता को विकसित करती है, जो उनके पढ़ने और लिखने की प्रारंभिक नींव को मज़बूत बनाती है।

रीडिंग बॉक्सेस से परिचय (Introduction to Reading and Writing): प्री-स्कूल में रीडिंग बॉक्सेस बच्चों को पढ़ने की प्रारंभिक आदतें सिखाने और शब्दों की पहचान में मदद करने का एक मजेदार तरीका है। रीडिंग बॉक्स में अलग-अलग अक्षर, शब्द, और चित्रों के कार्ड होते हैं जो बच्चों को भाषा की मूल बातें समझने में मदद करते हैं। इस गतिविधि में बच्चे इन कार्ड्स को देख कर शब्दों को पहचानना, उनका उच्चारण करना, और उनके अर्थ को समझना सीखते हैं।

उदाहरण के लिए, एक कार्ड पर कमल शब्द के साथ कमल के फूल की तस्वीर होती है। इससे बच्चे चित्र और शब्द को आपस में जोड़ना सीखते हैं, जो उनके याद रखने की क्षमता को बढ़ाता है। रीडिंग बॉक्स का उद्देश्य बच्चों में पढ़ाई के प्रति रुचि जगाना और उनके पढ़ने के कौशल को मज़बूत करना है। यह पद्धति बच्चों को शब्दों की पहचान, उच्चारण और उनके अर्थ को समझने में मदद करती है, जो उनके भाषा विकास के लिए महत्वपूर्ण है। मॉन्टेसरी हिंदी उपकरण गतिविधियाँ प्री-स्कूल बच्चों के लिए भाषा शिक्षा और समग्र बाल विकास की मजबूत नींव प्रदान करती हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे न केवल भाषा सीखते हैं, बल्कि अपनी भविष्य की शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण कौशल भी प्राप्त करते हैं।

बच्चों की कल्पनाओं का अनुपम प्रदर्शन

श्रीमती शालिनी सिंह
(हिंदी अध्यापिका)

"शिक्षा एक व्यक्ति को अनगिनत संभावनाओं की ओर आगे बढ़ने की अनुमति देती है।"

-स्वामी विवेकानंद

भाषा है संस्कृति की वाहक ।
संस्कृति है भाषा का आधार ॥

भाषा ही किसी संस्कृति का दर्पण होती है क्योंकि संस्कृति और भाषा का रिश्ता इतना गहरा है कि एक के बिना दूसरे को समझ पाना नितांत कठिन है । किसी भी देश की संस्कृति केवल त्योहार , रीति – रिवाज़ और कला ही नहीं है बल्कि यह उस देश के लोगों के विचारों ,मूल्यों ,विश्वासों और जीवन शैली का भी प्रतिबिंब है । जैसे कि ' वसुधैव कुटुंबकम ' या 'अतिथि देवो भव ' हमारी संस्कृति के मूल्यों को दर्शाते हैं । साहित्य किसी भी संस्कृति का खजाना होते हैं । कविता ,कहानियाँ और नाटक आदि हमें उस देश की संस्कृति के इतिहास , परंपराओं मनोविज्ञान को बताते हैं । संस्कृति और भाषा का रिश्ता एक पेड़ और उसकी जड़ों जैसा है । जड़ें पेड़ को पोषण देती हैं और पेड़ जड़ों को मजबूत बनाता है । इस तरह भाषा संस्कृति को व्यक्त करती है और संस्कृति भाषा को समृद्ध बनाते हैं । भारत देश की गंगा – जमुनी संस्कृति उसकी पहचान है । यह विविधता न केवल संस्कृति में बल्कि भाषा में भी दिखाई देती है । भारत की भाषायी और सांस्कृतिक सौंदर्यता को संरक्षित करना हम सभी का परम कर्तव्य है क्योंकि जिस देश की भाषा नहीं , उसकी संस्कृति नहीं।

हिंदी दिवस: भाषा का उत्सव, भारतीयता का गर्व

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी विद्यालय के प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों ने 14 सितंबर 2024,को हिंदी दिवस के रूप में, उत्साहपूर्वक मनाया। कक्षा तीन में दोहा वाचन ,कक्षा चार में हास्य कविता मंचन तथा कक्षा पाँच में हिंदी भाषा का महत्त्व बताते हुए पोस्टर बनाना आदि - कक्षा गतिविधियां आयोजित की गईं,जिनमें सभी विद्यार्थियों ने बढ़ - चढ़ कर भाग लिया ।

भाषा से जुड़ी विरासत, संस्कृति का अभिमान

हिंदी: जोड़े दिलों को, बढ़ाए राष्ट्र का मान

श्रीमती अंजू मिश्रा
हिंदी अध्यापिका

“शिक्षा वह शक्ति है जो हमें बाहरी समस्याओं का सामना करने की क्षमता प्रदान करती है।”

-मार्गरिट मीड

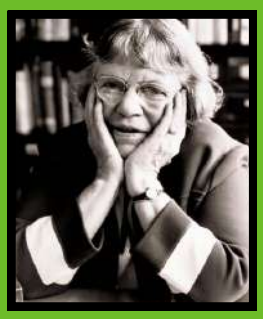

ज़रा सोचो तो ?

यह घटना आज से तिरेपन साल पहले की है। मेरे पिताजी भारतीय सेना में कार्यरत थे। उनकी पोस्टिंग पंजाब के पठानकोट में थी। १९७१ में भारत और पाकिस्तान के युद्ध ने जो प्रभाव मेरे कोमल ह्रदय पर डाला ,यह उसका संस्मरण है। साथ ही लगता है तिरेपन साल बाद भी इस संसार में कोई बदलाव नहीं आया। दुनिया के शक्तिशाली देश अभी भी अपनी सैन्यशक्ति के दम पर कमज़ोर देशों को अपने आधीन करना चाहते हैं ,भले ही इसके लिए उन्हें इस दुनिया को मिटटी के ढेर में बदलना पड़े। भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध के प्रारम्भ होने के बाद सैनिकों के परिवारों को बहुत सावधानी से रहना पड़ता था। दिन में जल्दी काम निपटा कर सैनिकों के परिवारों को बंकरों में जाना होता था। बंकर एक रक्षात्मक सैन्य किला होता है जिसे लोगों और मूल्यवान सामग्रियों को गिरने वाले बमों, तोपखाने या अन्य हमलों से बचाने के लिए डिज़ाइन किया जाता है। बंकर लगभग हमेशा भूमिगत होते हैं। बड़ों को यह बात समझ में आती थी लेकिन बच्चों के लिए यह समझना कठिन था। मुझे अपने दोस्तों साथ खेलना ,खाना ,घूमना बहुत याद आता और मैं उनसे मिलने की ज़िद करती पर माँ के समझाने पर मान जाती। एक दिन मुझसे रहा नहीं गया नज़र बचाकर अपनी सहेली के घर पहुँच गई और उसे बुलाने लगी पर वह नहीं आई। थोड़ी देर बाद मेरे पिताजी मुझे ढूँढ़ते हुए आए और सावधानीपूर्वक मुझे लेकर बंकर की ओर ले जाने लगे ,तभी कुछ दूरी पर धमाका हुआ और वहाँ पर बना बच्चों का स्कूल मिट्टी में मिल गया। स्कूल मेरे लिए वह जगह थी जो मुझे सबसे प्यारी थी। मैने सबसे पूछा मेरा स्कूल क्यों टूटा ,लेकिन किसी ने भी इसका उत्तर नहीं दिया। आज जब मुझे मेरे प्रश्न का उत्तर मिल गया है ,तो सोचती हूँ एक छोटा सा बम सुन्दर स्कूल जैसी कई जगहों को कुछ मिनटों में मिट्टी में मिला सकता है। तो आज़ यह सारी दुनिया परमाणु बम के ढेर पर बैठी है। कुछ शक्तिशाली देश जैसे रूस ,इजराइल अपनी सैन्य शक्ति का दुरूपयोग रहें हैं और विश्व को विनाश की ओर ले जा रहें हैं। अगर यह ऐसे ही चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब यह सुन्दर संसार मिट्टी में मिल जाएगा। अगर आज किसी देश ने परमाणु बम का प्रयोग अपनी ताकत दिखाने या किसी अन्य देश को डराने के लिए किया तो इस सुन्दर संसार का क्या होगा ?

ज़रा सोचो तो ?

हिंदी दिवस: हमारी मातृभाषा का सम्मान

12 सितंबर 2024 को हिंदी दिवस के अवसर पर एक विशेष प्रातःकालीन सभा का आयोजन किया गया। कक्षा 6 से 10 तक के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और हिंदी के महत्व को दर्शाने वाली विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं। सभा की शुरुआत एक मधुर हिंदी गीत से हुई, जिसके बाद छात्रों द्वारा एक सुंदर नृत्य प्रदर्शन किया गया, जो प्रसिद्ध हिंदी कविताओं को चित्रित कर रहा था। यह प्रस्तुति हिंदी साहित्य और इसकी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाने में सफल रही। सभा की प्रमुख आकर्षणों में से एक हिंदी के महत्व पर आधारित प्रश्नोत्तरी थी। छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और हिंदी भाषा, इसके इतिहास और भारत की पहचान में इसकी भूमिका के बारे में अपने ज्ञान का प्रदर्शन किया। एक और मनोरंजक प्रस्तुति थी छात्रों द्वारा दी गई नुक्कड़ नाटक जिसमें सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) पर ध्यान केंद्रित किया गया था। इस रचनात्मक प्रस्तुति ने वैश्विक चुनौतियों को हिंदी से जोड़ते हुए महत्वपूर्ण मुद्दों पर जागरूकता फैलाने में योगदान दिया।अंत में हिंदी के वरिष्ठ अध्यापक श्री मुक्तिनाथ मिश्र जी ने हिंदी के विभिन्न आयामों के महत्व को छात्रों को संबोधित कर परिचित करवाया।पूरे कार्यक्रम ने छात्रों में हिंदी के प्रति गर्व और सम्मान की भावना को बढ़ावा दिया, साथ ही भारत की भाषाई विविधता और एकता का उत्सव मनाया।

हम सब मिलकर दें सम्मान
निज भाषा पर करें अभिमान

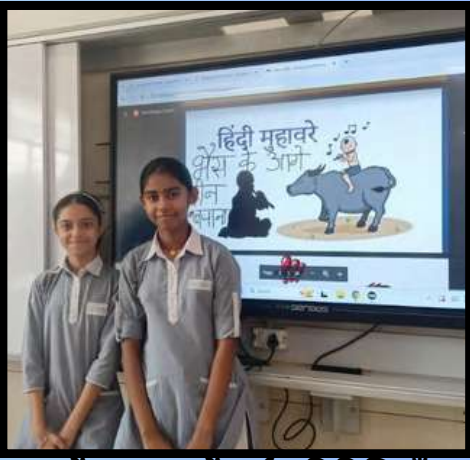

सितंबर 10 ,2024 को विद्यालय में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में बगलेस डे मनाया गया। कक्षाओं VI-VIII में कई गतिविधियाँ आयोजित की गईं। ये गतिविधियाँ कलांशोक अंतराल में आयोजित की गईं। शून्य पीरियड से लेकर दूसरे पीरियड तक मुहावरों पर आधारित विभिन्न गतिविधियाँ करवाई गईं, जैसे - मुहावरों के अर्थ, अर्थ से मुहावरे, चित्र द्वारा मुहावरों को पहचाना, और मुहावरों का अभिनय प्रस्तुत करना। तीसरे और चौथे पीरियड में कक्षा VI के विद्यार्थियों द्वारा काव्य गायन सामूहिक रूप किया गया और कक्षा VII और VIII के लिए काव्य चित्रांकन की गतिविधि करवाई गई जिसमें छात्रों ने अपनी पाठ्य पुस्तक से विभिन्न कविताओं को चित्रों द्वारा प्रस्तुत किया। पाँचवें और छठे कालांश में हिंदी दिवस और विश्व खाद्य दिवस पर आधारित विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गईं। जैसे कक्षा VI के विद्यार्थियों के लिए नारा लेखन, कक्षा VII के विद्यार्थियों के लिए पोस्टर निर्माण और कक्षा VIII के विद्यार्थियों के लिए विज्ञापन निर्माण प्रतियोगिता आयोजित की गई।पूरा दिन रंगारंग गतिविधियों से भरा हुआ था और छात्रों ने बहुत उत्साह के साथ भाग लिया।

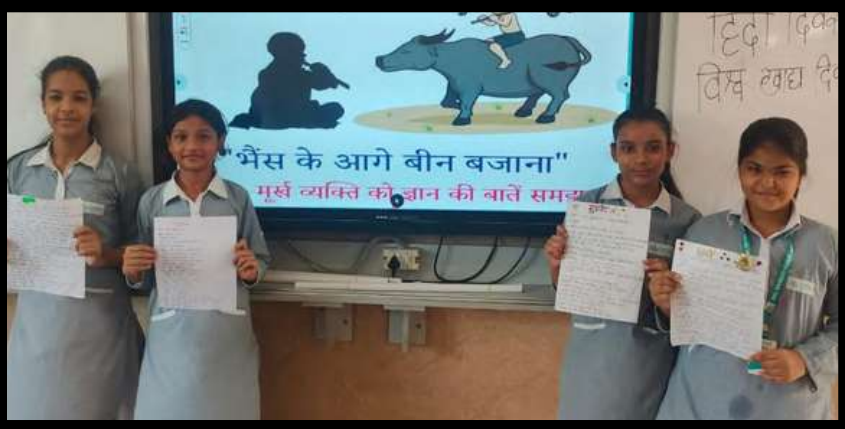

हिंदी प्रदर्शनी

दिनांक 21 सितंबर 2024, जो कि PTM का दिन था, उस दिन विद्यालय में छात्रों द्वारा तैयार की गई रचनात्मक कृतियों की प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में छात्रों द्वारा बनाई गई कविताएँ, पोस्टर, विज्ञापन निर्माण, और स्लोगन को प्रदर्शित किया गया। यह रचनात्मक कार्य कला-समेकित परियोजना (Art Integrated Project) के तहत तैयार किया गया था, जिसमें छात्रों ने अपनी कलात्मक क्षमताओं का प्रदर्शन किया और हिंदी भाषा को एक नए रूप में प्रस्तुत किया।

श्रीमती हंसिका ग्रोवर
हिंदी अध्यापिका

"शिक्षा से ही हम अपने अधिकारों को समझ सकते हैं और समाज में समानता ला सकते हैं।"

-भीम राव अम्बेडकर

"संस्कृति और भाषा परंपरा और प्रगति का संगम'

संस्कृति और भाषा एक-दूसरे के पूरक हैं, और इनका संबंध अत्यंत गहरा और अटूट है। संस्कृति किसी समाज या समुदाय के जीवन मूल्यों, विचारों, रीति-रिवाजों, परंपराओं और जीवन शैली का समग्र रूप है, जबकि भाषा उसकी अभिव्यक्ति का माध्यम है। भाषा के बिना संस्कृति का संचालन और संरक्षण संभव नहीं है, और संस्कृति के बिना भाषा का महत्त्व और अर्थ अधूरा रह जाता है।

"भाषा और संस्कृति का गहरा नाता है, यह रिश्ता सभ्यता को सजाता है।"

भाषा : संस्कृति का आधार-

भाषा संस्कृति को व्यक्त करने का सबसे महत्त्वपूर्ण साधन है। किसी समुदाय के इतिहास, कथाओं, ज्ञान और अनुभवों को आगे बढ़ाने के लिए भाषा एक सेतु का कार्य करती है। लोकगीत, कहानियों और साहित्य भाषा के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ते हैं और संस्कृति को जीवंत बनाए रखते हैं।

भाषा और संस्कृति का परस्पर प्रभाव-

भाषा न केवल संस्कृति का वाहक होती है, बल्कि उसे प्रभावित भी करती है। जब किसी समाज की संस्कृति बदलती है, तो उसकी भाषा में भी नए शब्द, मुहावरे और अभिव्यक्तियाँ जुड़ जाती हैं। इसके विपरीत, भाषा के विकास के साथ-साथ संस्कृति भी समृद्ध होती है।

O वैश्वीकरण का प्रभाव-

आज के समय में, वैश्वीकरण के कारण कई भाषाओं और संस्कृतियों पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। जब एक भाषा विलुप्त होती है, तो उसके साथ उसकी संस्कृति का एक बड़ा हिस्सा भी खो जाता है। इसलिए, भाषा और संस्कृति दोनों के संरक्षण की आवश्यकता है।

O निष्कर्ष-

संस्कृति और भाषा का संबंध अटूट है। यह रिश्ता एक पेड़ और उसकी जड़ों जैसा है, जहाँ भाषा जड़ है और संस्कृति उसका ऊपर का भाग। यदि भाषा संरक्षित और पोषित की जाए, तो संस्कृति भी समृद्ध होगी। इसलिए, हमें अपनी भाषा और संस्कृति दोनों को सहेजने का प्रयास करना चाहिए, ताकि हमारी पहचान और धरोहर आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रह सके।

प्रेमचंद की कहानियों का पिटारा

अप्रैल माह 2024 को कक्षा 5 के विद्यार्थियों ने प्रेमचंद की कहानियों का मंचन चार - चार के समूह में लाइब्रेरी गतिविधि के अंतर्गत किया । जिसमें प्रेमचंद की कहानियों ईदगाह,बूढ़ी काकी,नादान दोस्त तथा पांच परमेश्वर को विद्यार्थियों ने मंचित किया। कहानी में क्या अच्छा लगा तथा सीखने की बातों पर भी कक्षा चर्चा परिचर्चा हुई।

नन्हीं कलम से निकले अनमोल शब्द

संस्कारों से बंधा, भाषाओं से सजा
ये देश है मेरा, ये देश है मेरा
शिष्टाचार और सभ्यता की खान है
आने वाला अतिथि भी भगवान है।
भेदभाव से परे, ये मेरा हिन्दुस्तान है

"एक कोस पर बदले पानी
चार कोस पर वाणी"

अयाना
चौथी अ

संस्कृत से जन्मी है हिन्दी,
शुद्धता का प्रतीक है हिन्दी।
लेखन और वाणी दोनों को,
गौरान्वित करवाती हिन्दी।

उच्च संस्कार, विपिता है हिन्दी,
सतमार्ग पर ले जाती हिन्दी।
ज्ञान और व्याकरण की नदियाँ,
मिलकर सागर सौत्र बनाती हिन्दी।

हमारी संस्कृति की पहचान है हिन्दी,
आदर और मान है हिन्दी।
हमारे देश की गौरव भाषा,
एक उत्कृष्ट एहसास है हिन्दी।।

अक्षत जैन
III RD E

मेरा देश अनेक भाषाओं और मान्यताओं
का समाकरा।

निर्मल सुन है चारो ओर
फिर, किसीको कोई का बोझ
सोचू मिलनू है जरूरी
भाषा से न होगी दूरी

जितनी भी हो भाषाएँ यहाँ
विचारों में न दूरी यहाँ

अलग भाषा बोली अपनी
अलग अपनी मान्यताएँ
मनाते सब अलग त्यौहार
जिसमे झलके अपना प्यार

सदियों लम्बा इतिहास है
सारे देशों में खास है।
सूफी संतों की भाषा है
संबंधों की परिभाषा है।

यहाँ भगवा और हरा भी है
रंगों से भरा - भरा भी है।

भाषा की शक्ति और संचार का महत्व

भाषा की शक्ति से जग जगमगाता,
संचार से दुनिया जुड़ जाती।

विचारों का आदान - प्रदान,
जीवन को देता है नया भान।

अक्षरों से बनते शब्द,
शब्दों से बनते हैं रिश्ते गहरे।

भावों को व्यक्त करते,
वो भाषा की शक्ति।

जबान है ताकत, सोच का संसार,
संचार का माध्यम,
ये भाषा तोहफ़ा है।

आओ मिलकर, बोलें एक स्वर,
भाषा की शक्ति को करें उन्नत और।

गर्वित शर्मा
पांचवी इ

संस्कृति और भाषा का अटूट रिश्ता

कविता शर्मा
ऋत्विक शर्मा की माता
छठी-ई

संस्कृति और भाषा का एक अटूट रिश्ता है। भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं है, बल्कि यह किसी भी समाज की पहचान, परंपराओं और मूल्य प्रणाली को व्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। हमारी भाषा हमारे विचारों, भावनाओं और अनुभवों को शब्दों के रूप में प्रकट करती है, और इसी तरह हमारी संस्कृति को भी जीवित रखती है। उदाहरण के ~~तौर~~ तौर पर, अगर हम हिंदी या संस्कृत जैसी भाषाओं की बात करें, तो इन भाषाओं में हमारी ~~~~ प्राचीन सभ्यता, ज्ञान और आस्थाओं के बारे में गहरी जानकारी मिलती है। गीत, लोककथाएँ, साहित्य इन भाषाओं से हमारे समाज की सोच और संस्कारों को दर्शाती है। जब कोई भाषा लुप्त या नष्ट होने को होती है, तो उस भाषा के साथ-साथ उस भाषा से बसी संस्कृति और इतिहास भी समाप्त होने का खतरा रहता है। इसलिए यह कहा जाता है कि भाषा और संस्कृति दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। भाषा के बिना संस्कृति की पहचान अधूरी है, और संस्कृति के बिना भाषा का अस्तित्व फीका है। हमें अपनी संस्कृति को जीवित रखने के लिए अपनी भाषाओं को सुरक्षित रखना होगा, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी अपनी जड़ों से जुड़ी रह सकें

भावों की उड़ान

(हिंदी कविता)

* देखो, देखो मेरा देश जिसकी
है बहुत सी बोली कोई बोले शास्त्रीय कल
तो कोई बोले कैसा छो। बिन भाषा न
मिले कोई ज्ञान। बिन बिज
भाषा के, मिटन न हिय का शूल।

देखो देखो मेरा
देश

कोई पुकारे अल्ला - अ
तो कोई पुकारे दादा
बंगाली हो या मराठी
सब बोले अपनी भाषा
ये है मेरा प्यारा
देश।

अराध्या सैनी
पाँचवी 'ई'

यहाँ विविध बोलियों की भरमार है।
यहाँ तीज त्यौहार से प्यार है।
मेरा देश महान है।

यहाँ राम भी है, श्याम भी है और शिव शम्भु का धाम भी है।
यहाँ गीता भी है, बाइबल भी है, गुरुग्रंथ और कुरान भी है।
इसीलिए मेरा देश महान है।

यहाँ भगवा (हिंदु) भी है, हरा रंग (मुसलमान) भी है।
इन्हीं से बनता तिरंगा भी है।
जिसका करते सब सम्मान है।
मेरा देश महान है।

राव्या मान
पांचवी इ

मातृ भाषा में शिक्षा: अवसर और चुनौतियां

मातृ भाषा का संग है प्यारा,
ज्ञान का सागर समझ का सहारा ।
इसमें छिपा संस्कारों का रंग,
पढ़ाई के लिए नया उमंग ।
अवसर हैं इसमें अनगिनत,
जैसे गागर में सागर सिमट ।
बच्चों की सोच को दे विस्तार,
भाषा से जुड़े बने सशक्त विचार ।
पर चुनौतियां भी है राहों में,
भ्रमित कर देती है चाहों में ।
ग्लोबल भाषा का बढ़ता प्रचलन,
मातृभाषा को मान न मिलने का चलन ।
मगर याद रखो जड़ों की पहचान,
मातृ भाषा है ज्ञान उड़ान ।
संस्कृति का दीपक शिक्षा की ज्योति,
इसमें छिपी भविष्य की सच्ची संपत्ति ।
आओ मिलकर बनाएं ये सपना,
हर घर में हो भाषा अपनी ।
मातृ भाषा में हो शिक्षा का प्रवाह,
ज्ञान में बढ़ेगा तब भारत का उछाल ।

संगीता ढाका अभिभावक
पुलकित ढाका 8वीं- बी

भाषा का जादू: संचार की शक्ति और महत्व"

भाषा है एक अनमोल तोहफा,
जिससे हम दिलों को जोड़ते हैं,
हर शब्द में बसी है शक्ति,
जो दिलों की बातें मोड़ते हैं।
संचार से है जीवन रौशन,
हर भाव को वो जताता है,
जो समझ न पाए आंखें,
उसे भाषा खुल कर बताती है।
कभी हंसी में झलके प्यार,
कभी आंसुओं में दर्द का सार,
सही शब्द जो चुने अगर,
तो रिश्तों का खिल उठता है संसार।
छोटे-छोटे वाक्य होते हैं बड़े,
हर दिल तक पहुंचाते हैं,
भाषा से ही हम सब जुड़े हैं,
इसी से हम समझ पाते हैं।
भाषा और संचार का रिश्ता,
हर दिल को पास ले आता है,
एक-दूसरे को समझने का,
बस यही अनमोल जरिया बन जाता है।

आशी गुप्ता 9-E

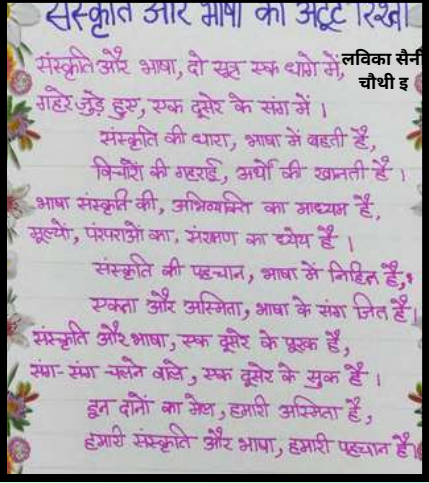

बहुभाषिकता के लाभों पर कविता:
बहुभाषिकता की दुनिया में,
जहाँ शब्दों की धुन बजती है,
वहाँ ज्ञान की गंगा बहती है,
और संस्कृति की खुशबू फैलती है।
बहुभाषिकता से दिमाग खुलता है,
नई दुनिया के दरवाजे खुलते हैं,
विचारों की दुनिया में घूमने को मिलता है,
और ज्ञान की खोज में आगे बढ़ने को मिलता है।
बहुभाषिकता से संस्कृति की समझ बढ़ती है,
विभिन्न संस्कृतियों की खुशबू महसूस होती है,
दुनिया की विविधता की सराहना होती है,
और एकता की भावना को बढ़ावा मिलता है।
बहुभाषिकता से आर्थिक अवसर बढ़ते हैं,
विश्व में अपनी पहचान बनाने को मिलता है,
व्यापार और वाणिज्य में आगे बढ़ने को मिलता है,
और दुनिया के साथ जुड़ने को मिलता है।
बहुभाषिकता की दुनिया में,
जहाँ शब्दों की धुन बजती है,
वहाँ ज्ञान की गंगा बहती है,
और संस्कृति की खुशबू फैलती हैं।

प्रणय राज अभीभावक
डॉ पारुल

संस्कृति और भाषा का अटूट रिश्ता

संस्कृति और भाषा का एक गहरा और अटूट रिश्ता है। भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं है, बल्कि यह किसी भी समाज की पहचान, परंपराओं और मूल्य प्रणाली को व्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। हमारी भाषा हमारे विचारों, भावनाओं और अनुभवों को शब्दों के रूप में प्रकट करती है, और इसी तरह हमारी संस्कृति को भी जीवित रखती है। हमारी परंपराएं, रीति-रिवाज, त्यौहार और जीवन के अन्य पहलू भाषा के माध्यम से ही पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ते हैं। उदाहरण के तौर पर, अगर हम हिंदी या संस्कृत जैसी भाषाओं की बात करें, तो इन भाषाओं में हमारी प्राचीन सभ्यता, ज्ञान और आस्थाओं के बारे में गहरी जानकारी मिलती है। साहित्य, लोककथाएँ, गीत और ग़ज़लें इन भाषाओं में हमारे समाज की सोच और संस्कारों को दर्शाती हैं। जब कोई भाषा लुप्त हो जाती है या उसे नष्ट कर दिया जाता है, तो उस भाषा के साथ-साथ उस भाषा में बसी संस्कृति और इतिहास भी समाप्त होने का खतरा होता है। इसलिए, भाषा का संरक्षण हमारे सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा के समान है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि भाषा और संस्कृति दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। भाषा के बिना संस्कृति की पहचान अधूरी है, और संस्कृति के बिना भाषा का अस्तित्व भी फीका पड़ जाता है। हम अपनी संस्कृति को जीवित रखने के लिए अपनी भाषाओं को संरक्षित करें, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी अपनी जड़ों से जुड़ी रह सकें।

ऋत्वि शर्मा अभिभावक
श्रीमती कविता शर्मा

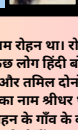

"भाषा और संस्कृति: एक अटूट बंधन"

संस्कृति की माटी में भाषा की खुशबू,
दोनों से जीवन को मिलती है रुचि और रंगीन जुड़ाव।
भाषा में गूंजे संस्कारों की धुन,
संस्कृति के गीतों में रचे मीठे सुर।
संग चलें जैसे जल और नदी,
संस्कृति में बसी भाषा की कड़ी।
भाषा से संस्कृति की पहचान,
इनके बिना अधूरा जहान।
भाषा शब्दों में संस्कृति का सार,
जुड़ते हैं दिल, न कोई दीवार।
दोनों का संग अमूल्य अनमोल,
संस्कृति और भाषा का रिश्ता अनोखा, बेमिसाल।

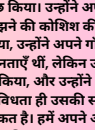

सायमा मर्री, सातवीं A

एक छोटे से गाँव में एक लड़का रहता था जिसका नाम रोहन था। रोहन का परिवार बहुत ही साधारण था, लेकिन वे बहुत ही सुखी और संतुष्ट थे। रोहन के गाँव में बहुत सारी भाषाएँ बोली जाती थीं। कुछ लोग हिंदी बोलते थे, कुछ तमिल, कुछ तेलुगु, और कुछ मराठी। रोहन के परिवार में भी हिंदी और तमिल दोनों भाषाएँ बोली जाती थीं।

एक दिन, रोहन के गाँव में एक नया शिक्षक आया। उसका नाम श्रीधर था और वह तमिलनाडु से आया था। श्रीधर बहुत ही ज्ञानी और अनुभवी थे, और उन्होंने रोहन के गाँव के बच्चों को पढ़ाने का फैसला किया।

श्रीधर ने रोहन के गाँव के बच्चों को तमिल, हिंदी, और अंग्रेजी में पढ़ाना शुरू किया। रोहन और उसके दोस्त बहुत ही उत्साहित थे और उन्होंने श्रीधर से बहुत कुछ सीखा।

जैसे ही रोहन और उसके दोस्तों ने तमिल, हिंदी, और अंग्रेजी में पढ़ाई करनी शुरू की, उन्होंने अपने गाँव की विविधता को समझना शुरू किया। उन्होंने देखा कि उनके गाँव में बहुत सारी भाषाएँ बोली जाती थीं और बहुत सारी संस्कृतियाँ थीं।

रोहन और उसके दोस्तों ने अपने गाँव की विविधता को समझने के लिए बहुत कुछ किया। उन्होंने अपने गाँव के लोगों से बात की, उनकी कहानियाँ सुनीं, और उनकी परंपराओं को समझने की कोशिश की।

जैसे ही रोहन और उसके दोस्तों ने अपने गाँव की विविधता को समझना शुरू किया, उन्होंने अपने गाँव के लोगों के प्रति अधिक सम्मान और समझ विकसित की। उन्होंने देखा कि उनके गाँव के लोगों में बहुत सारी समानताएँ थीं, लेकिन उनमें बहुत सारी विविधताएँ भी थीं।

रोहन और उसके दोस्तों ने अपने गाँव की विविधता को समझने के लिए बहुत कुछ किया, और उन्होंने अपने गाँव के लोगों के प्रति अधिक सम्मान और समझ विकसित की। उन्होंने देखा कि उनके गाँव की विविधता ही उसकी सबसे बड़ी ताकत थी।

इस कहानी से हमें यह सीखने को मिलता है कि विविधता ही हमारी सबसे बड़ी ताकत है। हमें अपने आसपास की विविधता को समझने और सम्मान देने की कोशिश करनी चाहिए।

प्रणय राज
नौवीं सी

मेरा देश अनेक भाषाओं और मान्यताओं का समावेश

मेरा देश अनेक भाषाओं का देश,
अनेक मान्यताओं का समावेश।
जहाँ अनेकता में एकता का वास,
जहां विविधता का सम्मान और सहिष्णुता का निवास।
मेरा देश, अनेक भाषाओं का समावेश,
उत्तर में हिंदी और दक्षिण में तमिल,
पूर्व में बंगाली और पश्चिम में मराठी की धुन।
जहां हर भाषा का सम्मान है, हर बोली का आदर है।
मेरा देश, अनेक धर्मों का देश,
अनेक जातियों का देश।
जहां हर धर्म का सम्मान है, हर जाति का आदर है।
जहां देश सहिष्णुता और प्रेम का संदेश देता है।
मेरा देश, अनेक नदियों, पर्वतों का देश।
जहाँ गंगा की धारा से लेकर हिंदी महासागर की लहर तक,
हिमालय की चोटी से लेकर कन्याकुमारी तक।
विविधता का सम्मान और एकता का परचम लहराता है।
मेरा देश, अनेक त्योहारों का देश,
अनेक पोशाकों का देश।
जहां होली, दिवाली से लेकर ईद और क्रिसमस तक।
सूट सलवार से लेकर मेखला चादर तक।
यहां की संस्कृति नजर आती है।
मेरा देश, अनेक कलाओं का देश,
अनेक आहारों का देश।
जहां गरबा भांगड़ा से लेकर कथकली मणिपुरी तक।
जहां दाल बाटी से लेकर इडली डोसा तक।
यहां की मेहमाननवाजी एक परंपरा है।
मेरा देश, अनेक मान्यताओं का देश।
जहां सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताएं हैं।
जहां करोड़ों देवी-देवताओं का वास है।
यहां बड़ों का आदर और सम्मान एक मान्यता है।
मेरा देश, अनेकता में एकता का प्रतीक है।
मेरा देश, संस्कृति और परंपरा का प्रतीक है।
यहां की विविधता ही इसकी सबसे बड़ी ताकत है।
यहां की एकता ही इसकी सबसे बड़ी शक्ति है।
रजनी गुप्ता अभिभावक
आद्या गुप्ता
कक्षा – 5 ब

हमारी भाषा हमारी पहचान
जो देती हमें हमारी संस्कृति का ज्ञान
दर्शाती हमारी भावनाएँ बड़ी आसान
जो जोड़े रखे हमें हमारी परंपरा से,
है ये ज्ञान का भंडार,
नहीं कहते हम सुप्रभात
कहते हैं हाथ जोड़कर नमस्कार
मेरी भाषा का ज्ञान
जो दैती हैं सबको सम्मान!
ईश्वर से जुडने का मार्ग
सिखाती हमें सदा आसान
कर्म धर्म का ज्ञान है अपार
है ये ज्ञान का भंडार,

आराध्या मल्होत्रा द्वारा लिखित
पाँचवीं-सी

करते हैं तन माणसे वंदन,
जन गण मन की अभिलाषा का।
अभिनन्दन अपनी संस्कृति का ,
आराधन अपनी भाषा का।
यह अपनी शक्ति सर्जना के,
माथे की है चन्दन रोली।
माँ के आँचल की छाया में,
हमने जो सीखी है बोली।
यह अपनी बंधी हुई अंजुरी ,
ये अपने गंधित शब्द सुम।
यह पूजन अपनी संस्कृति का,
यह अर्चन अपनी भाषा का ।
भाषा की शक्ति और संचार का महत्त्व
करो अपनी भाषा से प्यार,
जिसके बिना मूक रहते तुम, रुकते सब व्यवहार।
जिसमे पुत्र पिता कहता है ,पत्नी प्राणाधार।
और प्रकट करते हो जिसमे तुम निज निखि विचार।
बढ़ाओ बस उसका विस्तार
करो अपनी भाषा से प्यार।
भाषा बिना व्यर्थ ही जाता इश्वर्य ज्ञान ,,
सब दानों से बहुत बड़ा है ईश्वर का यह दान।
असंख्य हैं इसके उपहार
करो अपनी भाषा से प्यार।
यही पूर्वजों का देती है तुमको ज्ञान प्रसाद।
और तुहारे भी भविष्य को देगी शुभ संवाद।
बनाओ इसे गले का हार ,
करो अपनी भाषा से प्यार।

ज्योति मालिक
अभिभावक
प्रियांशी

'भाषा' और 'संस्कृति' एक अटूट रिश्ता

भाषा समय के साथ अनुकूलित और विकसित होती है, जो समाज के भीतर परिवर्तनों और विकास को दर्शाती है। नित्यप्रति संस्कृति में हुए परिवर्तनों को भाषा द्वारा व्यक्त करने के लिए भाषा में नये-नये प्रयोगों, नये-नये शब्दों की खोज का कार्य होना बहुत आवश्यक है, जिससे बदलते हुए नये भावों को उचित रूप से व्यक्त किया जा सके। 'भाषा' और 'संस्कृति' ये दोनों ही न सिर्फ एक-दूसरे से जुड़े हैं अपितु एक दूसरे के पूरक हैं।

किसी भी संस्कृति के विकास में भाषा और साहित्य का बड़ा योगदान होता है। संस्कृति व्यक्ति या समाज के चिंतन का प्रतिफल होती है। संस्कृति को विशिष्टता प्रदान करने वाले कारकों में एक प्रमुख पहलू भाषा का है। भाषा के बिना संस्कृति की कल्पना भी नहीं की जा सकती क्योंकि संस्कृति भाषा के माध्यम से ही व्यक्त होती है। जिस भाषा में आप चिंतन करते हैं उसकी प्रतिछाया आपकी संस्कृति में भी परिलक्षित होती है। संस्कृति भाषा पर टिकी हुई है। यदि भाषा नष्ट हो जाए, तो संस्कृति भी समाप्त हो जाती है। संस्कृति ने जिन आदर्शों और मूल्यों को हजारों वर्षों के अनुभवों के बाद निर्मित किया है, वे गर्त में विलीन हो जाते है। ठीक वैसे ही जैसे मां रूपी मिट्टी से जन्मा पेड़ तब तक हरा-भरा रहता है, जब तक उस मिट्टी से जुड़ा है, जबकि मिट्टी से कटते ही वह मुरझा जाता है। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि संस्कृति अपनी भाषा के जरिए ही जीवित रहती है। भाषा के बदलने से मूल्य भी बदल जाते हैं। वहीं संस्कृति भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिससे भाषा का उपयोग और प्रभाव बढ़ जाता है क्योंकि भाषा संस्कृति के संदर्भ में ही अर्थ प्राप्त करती है। संस्कृति बहुत व्यापक शब्द है जिसका प्रयोग अनेक और भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता आया है। सरल शब्दों में संस्कृति आचार विचार, व्यवहार और आचरण की शैली है जो अभ्यासवश एक स्वभाव बन जाती है। हमारी सामाजिक मान्यताएँ, रीति-रिवाज़, परम्पराएँ और धार्मिक विश्वास सभी इसमें समाहित हैं। लोक भाषा में हम इन्हें संस्कार कहते हैं। संस्कार ही संस्कृति बनाते हैं। ये संस्कार हमें मिलते हैं अपनी भाषा से और भाषा बनती है घर-परिवार, समाज और परिवेश से। हम जैसी भाषा बोलते हैं हमारे संस्कार वैसे ही बनते हैं।

भारतीय संस्कृति यदि आज तक अक्षुण्ण रही है, सुदृढ़ और प्रभावशाली रही है तो इसके मूल में हमारी वैदिक और भारतीय भाषाएँ हैं जिनमें 'सर्वे भवन्तु सुखिनः', 'वसुधैव कुटुम्बकम' एवं 'अतिथि देवो भवः' की भावनाएँ हैं।

परन्तु आज हम आयातित भाषा और संस्कृति के शिकार हो रहे हैं। हमारी युवा पीढ़ी अँग्रेज़ी और अन्य पाश्चात्य भाषाओं के माध्यम से एक ऐसी संस्कृति को अपनाने में मोहग्रस्त हो रही है जिसकी बुनियाद भोगवाद पर टिकी है। हम इसकी चकाचौंध में आधुनिकता के नाम पर बड़े गर्व से इसे अपना रहे हैं। संयुक्त परिवारों में बिखराव और वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या इसके परिणाम हैं। भाषा का बदलाव धीरे धीरे हमारे पहनावे, पर्व-त्योहारों और खान पान आदि पर भी प्रभाव डाल रहा है। यदि इस प्रवृत्ति पर अंकुश नहीं लगाया गया तो यह हमारी संस्कृति को लील जाएगी। विदेशी भाषा का पठनपाठन-, अध्ययन क्षेत्र विशेष में महारथ हासिल करने के लिए तथा अपनी संस्कृति और भाषा की समृद्धि के लिए होना चाहिए उसके पतन के लिए नहीं। इसलिए हमें अपनी भारतीय भाषाओं और भारतीय संस्कृति को संजो कर रखने के लिए प्रयत्नरत रहना होगा।

अनुभा शर्मा
M/o संयम शर्मा
आठवीं -बी

Student Name: Ananshi
Class: 4th-A

बहुभाषीय शिक्षा का भविष्य

बहुभाषीय शिक्षा का अर्थ है, एक से अधिक भाषाओं में पढाई करना। यह बच्चों को नयी भाषाएं सीखने का अवसर देती है और उनके ज्ञान को बढाती है। जब बच्चे अलग-अलग भाषाएं सीखते हैं, तो उनका दिमाग तेज़ होता है और उनकी याददाश्त बेहतर होती है।

बहुभाषीय शिक्षा से बच्चे अलग-अलग संस्कृतियों को समझ पाते हैं और दूसरों से अच्छे संबंध बना सकते हैं। यह उन्हें रोज़गार के बेहतर अवसर भी प्रदान करती है, क्योंकि आज के समय में कई भाषायें जानने वाले लोग अधिक सफल होते हैं।

इसलिए, बहुभाषीय शिक्षा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह न केवल उन्हें भाषाओं का ज्ञान देती है, बल्कि उनकी सोचने समझने की क्षमता को भी बढाती है।

भावनाओं का कलात्मक प्रवाह

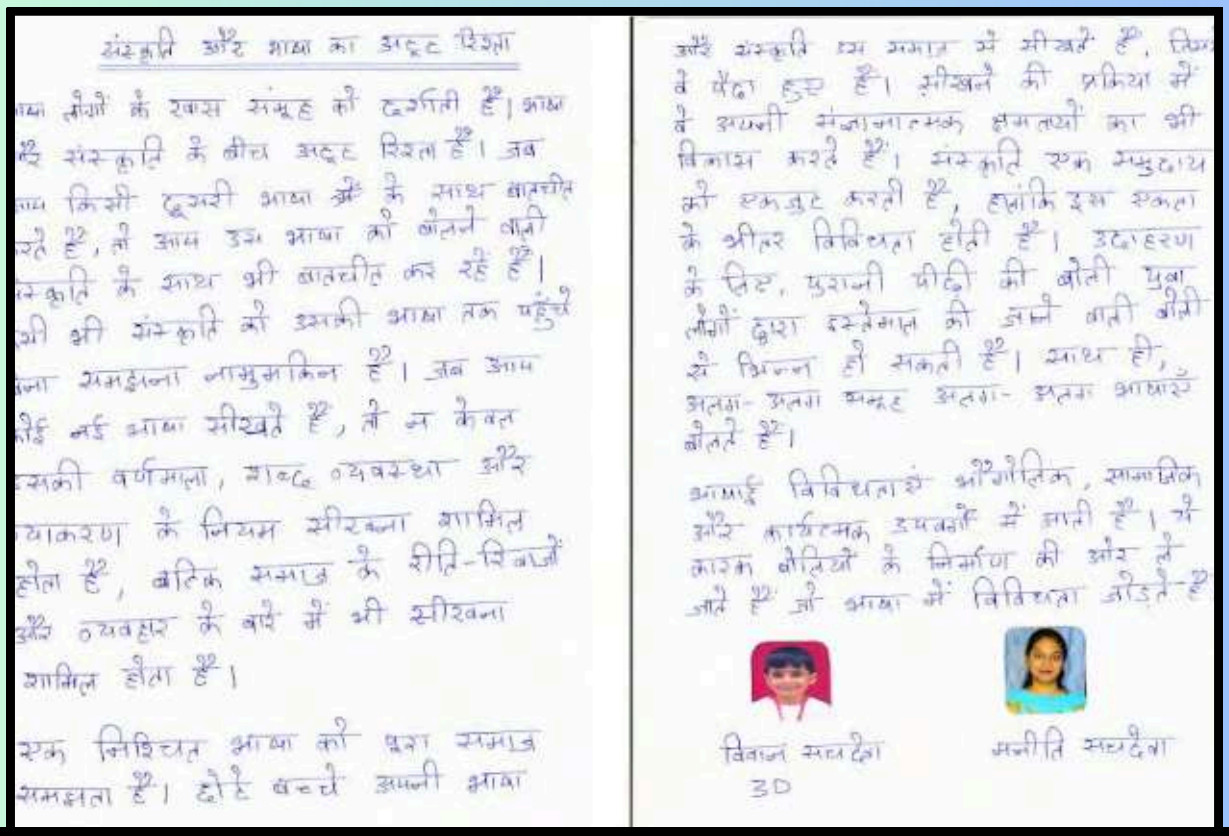

संस्कृति और भाषा का अटूट रिश्ता

भाषा लोगों के खास समूह को दर्शाती है। भाषा और संस्कृति के बीच अटूट रिश्ता है। जब हम किसी दूसरी भाषा के साथ बातचीत करते हैं, तो आप उस भाषा को बोलने वाली संस्कृति के साथ भी बातचीत कर रहे हैं। किसी भी संस्कृति को उसकी भाषा तक पहुंचे बिना समझना नामुमकिन है। जब आप कोई नई भाषा सीखते हैं, तो न केवल उसकी वर्णमाला, शब्द व्यवस्था और व्याकरण के नियम सीखना शामिल होता है, बल्कि समाज के रीति-रिवाजों और व्यवहार के बारे में भी सीखना शामिल होता है।

एक निश्चित भाषा को पूरा समाज समझता है। छोटे बच्चे अपनी भाषा और संस्कृति उस समाज में सीखते हैं, जिसमें वे पैदा हुए हैं। सीखने की प्रक्रिया में वे अपनी संज्ञानात्मक क्षमताओं का भी विकास करते हैं। संस्कृति एक समुदाय को एकजुट करती है, हालांकि इस एकता के भीतर विविधता होती है। उदाहरण के लिए, पुरानी पीढ़ी की बोली युवा लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली बोली से भिन्न हो सकती है। साथ ही, अलग-अलग समूह अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं।

भाषाई विविधताएं भौगोलिक, सामाजिक और कार्यात्मक इकाइयों में आती हैं। ये कारक बोलियों के निर्माण की ओर ले जाते हैं जो भाषा में विविधता जोड़ते हैं

विवान सचदेवा
3D

मनीति सचदेवा

अध्यान गोयल
3 - बी
भारत की भाषाई विविधता:
एक शक्ति या चुनौती

भारत एक ऐसा देश है, जहाँ कई भाषाएँ बोली जाती है | यह हमारी सबसे बड़ी ताकत है, क्योंकि हर भाषा की अपनी अलग पहचान और संस्कृति लाती है | भाषाई विविधता हमें एकता और समानता का पाठ पढ़ाती है | यह हमारी संस्कृति को समृद्ध बनती है और हमें दुनिया में अलग पहचान दिलाती है | लेकिन यह कभी कभी चुनौती भी बन जाती है | अलग-अलग भाषाओ के कारण लोगों को एक-दूसरे को समझने में परेशानी हो सकती है | सभी भाषाओं को समान महत्व देना मुश्किल होता है | फिर भी , यदि हम अपनी भाषाई विविधता को अपनायें और एक दूसरे की भाषा का सम्मान करें। तो यह हमारे सबसे बड़ी शक्ति बन सकता है | यही भारत की असली पहचान है |

संस्कृत और भाषा का अटूट रिश्ता

संस्कृत और भाषा का अटूट रिश्ता भारतीय संस्कृति और साहित्य के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण
है। संस्कृत, प्राचीन भारतीय भाषाओं में से एक है, जिसे देववाणी भी कहा जाता है। यह न केवल
धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथों की भाषा रही है, बल्कि भारतीय ज्ञान, विज्ञान, कला, और साहित्य की नींव भी रही है। भाषा का उद्भव: संस्कृत, इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार से संबंधित है और इसका विकास हजारों वर्षों पहले हुआ। यह प्राचीन भारतीय सभ्यता का आधार रही है और प्राचीनतम शास्त्रों, वेदों, उपनिषदों, पुराणों और महाकाव्यों की भाषा रही है। ज्ञान का प्रसार: संस्कृत का भाषा और ज्ञान से गहरा संबंध है। इसका साहित्य न केवल धार्मिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण से समृद्ध है, बल्कि यह गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, और अन्य विज्ञानों के बारे
में भी गहरे अध्ययन का प्रमाण है। उदाहरण के तौर पर, आर्यभट्टी, भास्कराचार्य, और चरक संहिता
जैसी कृतियाँ संस्कृत में लिखी गईं। आधुनिक भाषाओं पर प्रभाव: संस्कृत के व्याकरण और शब्दों का अन्य भारतीय भाषाओं पर गहरा प्रभाव पड़ा है। हिंदी, बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी जैसी भाषाएँ संस्कृत से बहुत प्रभावित हैं। इन भाषाओं में संस्कृत के शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है और संस्कृत का व्याकरणीय ढांचा भी इन भाषाओं में देखा जाता है। संस्कृत और आधुनिकता: आज के समय में भी संस्कृत का महत्व कम नहीं हुआ है। यह न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में जीवित है, बल्कि इसके अध्ययन से भाषा, साहित्य और दर्शन की गहरी समझ प्राप्त होती है। कई विश्वविद्यालयों में संस्कृत के पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं और इसका अध्ययन विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है। संस्कृत और भाषा का रिश्ता एक ऐसी नींव है जो भारतीय भाषाओं और सांस्कृतिक धरोहर को जोड़ता है, और यह न केवल अतीत को समझने, बल्कि भविष्य की दिशा निर्धारित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मीनाक्षी गौर अभिभावक
अनिका गौर
कक्षा तीसरी ब

भाषा की शक्ति और संचार का महत्व

भाषा शक्ति :-

किसी दी गई भाषा में प्रभावी ढंग से संप्रेषण करने की क्षमता का माप है। दुनिया भर में मौजूदा अनुदेशात्मक कार्यक्रम नामांकित लोगों को दूसरी भाषा में संवाद करना सिखाने का प्रयास जारी रखते हैं - फिर भी वे संघर्ष करते हैं। क्योंकि मौजूदा पद्धतियों के परिणामस्वरूप आमतौर पर शिक्षार्थी नई भाषा में प्रभावी ढंग से संवाद करने में सक्षम नहीं होते हैं। इस वैश्विक समस्या का मूल कारण यह है कि शिक्षार्थी अपने भाषण में देशीपन के पर्याप्त स्तर तक नहीं पहुंच पाते हैं जो शिक्षार्थी की करियर उपलब्धियों को नुकसान पहुंचाता है-

भाषा शक्ति में दो प्रमुख घटक होते हैं:-

बोलने और समझे जाने की क्षमता। सुनने और समझने की क्षमता। संचार का महत्व संचार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक प्रेषक एक उपयुक्त चैनल के माध्यम से एक संदेश प्रेषित करता है, और इसे इच्छित प्राप्तकर्ता द्वारा प्राप्त किया जाता है जो संदेश को स्वीकार करने के लिए तैयार और ग्रहणशील होता है, जिसके द्वारा मौखिक और गैर-मौखिक संदेशों के आदान-प्रदान के माध्यम से लोगों द्वारा सूचना, अर्थ और भावनाओं को प्रदान किया जाता है, आपस में बदला जाता है या प्रेषित किया जाता है। जिसमें दोनों पक्ष एक ही समय में संदेश भेजते और प्राप्त करते हैं; ऐसा कहा जाता है कि संवाद न करना असंभव है। इसलिए यह जानना महत्वपूर्ण है, अर्थ और भावनाओं को सांझा किया जाता है न कि केवल
मौखिक बातचीत पर जोर दिया जाता है।

बहुभाषीय शिक्षा का भविष्य

भविष्य में शिक्षा का निखरेगा रंग अपार,
भारत में सब भाषाओं को मिलेगा जब आधार।
सब भाषाओं को अपनाकर भारत बने महान,
भारत का बच्चा बच्चा जब करे योगदान।
हर देश में प्यारे भारत का परचम लहराएगा,
जब भारत के हर विद्यालय में हर भाषा का ज्ञान कराया जाएगा।
विदेशी भी भारत आकर अपनापन पाएंगे ,
वापिस जाते समय यादें संग ले जायेंगे।
भेद भाव की परत हटा कर भारत विजय पथ पर बढ़ता जाएगा , देश विदेश में अपना भारत विश्व गुरु कहलाएंगा ॥

अध्विका सिंह 4डी

शिक्षकगण का योगदान

श्रीमती सपना माकन
टी जी टी गणित

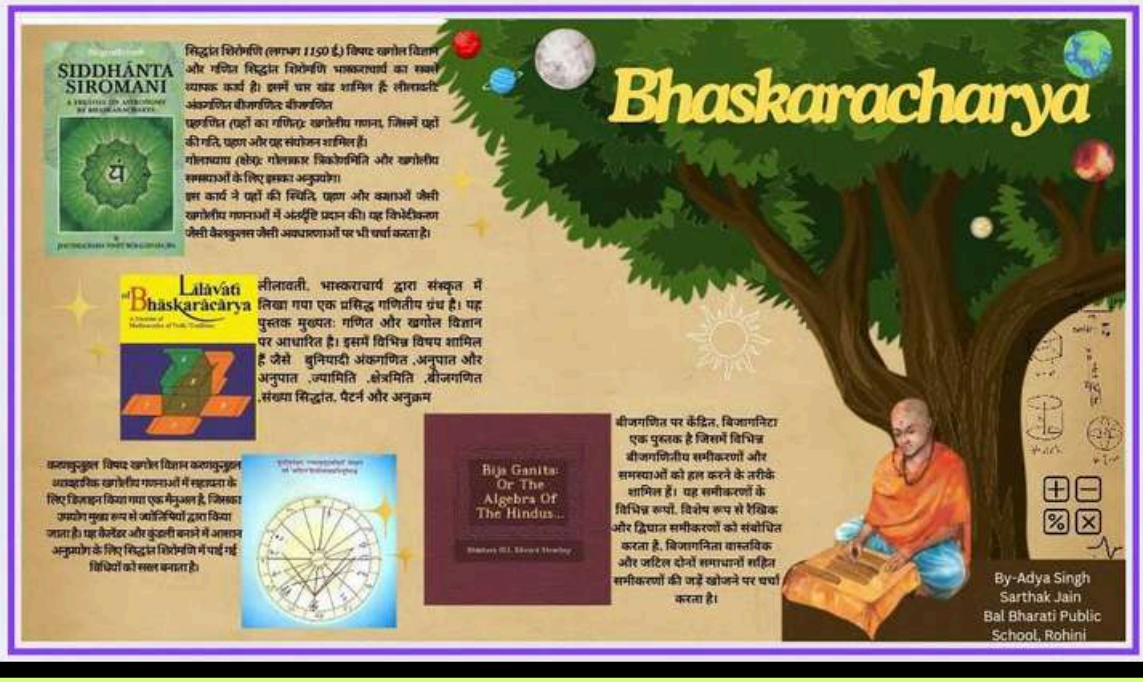

दिल्ली एसोसिएशन ऑफ मैथमेटिक्स टीचर्स द्वारा आयोजित भारतीय गणित दिवस 2024 के अवसर पर भारतीय गणितज्ञ *भास्कराचार्य* के योगदान पर इन्फोग्राफिक।

इन्फोग्राफिक गणितीय का जश्न मनाने के लिए बनाया गया था

भारत की यात्रा-

नेपोलियन ने कहा था कि "महान गणितज्ञ के बिना कोई महान राष्ट्र नहीं बन सकता"। गणितीय मूल्य गणितीय ज्ञान की प्रकृति से ही जुड़े होते हैं। आज समाज उस स्तर पर पहुंच गया है जहां बच्चों को उनकी संस्कृति के पारंपरिक मूल्यों में शिक्षित करना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। इस बात पर काफी चर्चा हुई है कि क्या मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करना स्कूलों की जिम्मेदारी है। मौजूदा विषयों के माध्यम से मूल्य शिक्षा प्रदान करने के कई अवसर हैं। समस्याओं के प्रकार जिनका उपयोग मूल्यों को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है *शब्द समस्याओं के माध्यम से विद्यार्थियों को जीवन में आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार करना, जहां अवधारणा वास्तविक दुनिया की स्थिति से होती है और छात्र हल करने के लिए उचित नियम को पहचानता है और लागू करता है *गैर-नियमित समस्याओं के माध्यम से सामान्य ज्ञान और सामान्य ज्ञान के विकास को प्रोत्साहित करना *विद्यार्थियों को समाज की सेवा में संलग्न करना अब प्रश्न यह उठता है कि गणित पढ़ाकर मूल्यों को कैसे बढ़ाया जा सकता है?

लगातार बदलते परिवेश में व्यक्तियों को अपने बारे में सोचने की जरूरत है क्योंकि प्रौद्योगिकी बड़ी मात्रा में जानकारी उपलब्ध कराती है। उन्हें अतीत के लोगों की तुलना में अपरिचित और अप्रत्याशित परिस्थितियों के अनुकूल ढलने की भी जरूरत है। समस्या समाधान दृष्टिकोण न केवल छात्रों को मौलिक विचार रखने के लिए प्रोत्साहित करेगा बल्कि वे अपने सीखने की जिम्मेदारी भी लेंगे। हालांकि ये महत्वपूर्ण गणितीय कौशल हैं, ये महत्वपूर्ण जीवन कौशल प्रदान करते हैं और छात्रों को मूल्य शिक्षा से परिचित कराने में मदद करते हैं जो उनके समग्र विकास के लिए आवश्यक है। गणित शिक्षण में ऐसे कौशल और कार्य शामिल हो जाये जो रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा हैं।

हिंदी संस्कृत साहित्यिक संगम

डॉ. सीमा चड्ढा
टी.जी.टी. संस्कृत

'संस्कृत ही क्यों?' यह प्रश्न मेरे जीवन में सदा एक चुनौती की तरह मेरे समक्ष रहा है। अपनी विद्यालयीय शिक्षा के दौरान जब मैं इसी विषय का अध्ययन कर रही थी तो मेरे लिए इस विषय पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करना एक टेढ़ी खीर थी। भाषा अत्यंत सुंदर थी किंतु कठिन थी। रुझान इसलिए बना कि कक्षा में प्रश्नोत्तर के दौरान हौंसलें पस्त हो जाया करते थे। फिर जब बात प्रतिष्ठा पर बन आई तो एक चुनौती की तरह इसे स्वीकारते हुए भाषा की गहराई को समझने का प्रयास किया। नतीजतन भाषा से लगाव हो गया और जितना इस भाषा को पढ़ती जाती,उतनी ही संकल्पबद्ध स्वयं को महसूस करती। समय बीतने के साथ सभी डिग्रियां इसी भाषा में प्राप्त कर अपना उत्तरदायित्व मैंने अध्यापन में खोज लिया ।अब दूसरी चुनौती थी, अपने शिष्यों में भी वही लगन पैदा करूं और मृत घोषित इस भाषा को प्रचलित कर, इसकी भविष्य में उपयोगिता सिद्ध कर सकूं। सरकार द्वारा त्रिसूत्रीय भाषा के अंतर्गत संस्कृत को पढ़ना एक विवशता न होकर एक आकर्षण बन जाए, बस इसी क़वायद में गत चौबीस वर्षों से लगी थी कि क्रियात्मक अनुसंधान के लिए मेरे अधिकारियों द्वारा मेरा चयन किया गया। अब मेरे लिए यह स्वर्णिम अवसर था अपने इस स्वप्न की सार्थकता सिद्ध करने का। किंतु समस्या यही थी कि मेरी ही तरह मेरे शिष्य भी संस्कृत भाषा को दुरूह व क्लिष्ट समझते हुए उसे पढ़ने से कतराते थे। अतः मेरे समक्ष यह बड़ी चुनौती थी कि मैं किस प्रकार उन्हें इस भाषा से मैत्री करने के लिए आश्वस्त करूं। छठी कक्षा इस चुनौती के लिए छोटी थी अतः मैंने कक्षा सात की अधिक अशक्त कक्षा "सातवीं डी" का अपनी हस्तक्षेप कक्षा हेतु चयन किया और इस तरह से दो भिन्न कक्षाओं में तुलनात्मक अध्ययन करते हुए आंकड़ों का संकलन किया। संकाय के सहकर्मियों तथा शिक्षार्थियों की निरंतर सहायता व सहयोग से मैं इस अनुसंधान को पूर्णता का जामा पहनाने में सफल हो सकी। मैंने नाट्य को अपना साधन बनाते हुए छात्रों में भाषा के प्रति रुचि जागृत की और इसमें उनका लगाव पैदा किया। मेरे क्रियात्मक अनुसंधान का उत्प्रेरक प्रश्न था "नाट्य का प्रयोग करते हुए कैसे संस्कृत भाषा सातवीं कक्षा के शिक्षार्थियों के लिए जीवंत तथा मनोरम बनाकर उनकी रचनात्मक तथा विषय केंद्रीकरण क्षमताओं का विकास कर सकती है।" मैंने इस परियोजना से यह सीखा है कि नाट्य का प्रयोग न केवल संस्कृत शिक्षण को अपितु हिंदी शिक्षण को भी संलग्नात्मक बनाने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। संस्कृत व हिंदी शिक्षण में नाट्य प्रयोग से न केवल शिक्षार्थियों की रुचि ही बढ़ती है अपितु अपनी प्रस्तुति देते समय वे सशक्त व संतुलित व्यक्तित्व का परिचय देते हैं । मैंने अपने क्रियात्मक अनुसंधान को विभागीय सदस्यों के साथ साझा किया तथा उनके सुझाव एकत्रित किए। इस अनुसंधान के पश्चात् अब मेरे छात्र मुझ पर अधिक विश्वास करते हुए भाषा के प्रति अधिक रुचि प्रकट करते हैं और स्वयं अभ्यास हल करने का प्रयास करते हैं। इस पूरे उपक्रम में मैंने लिखित दस्तावेजों और अनवरत तथा सकारात्मक प्रतिपुष्टि के महत्व को पहचाना है। अपनी शिक्षण नीति में और अधिक आश्वसत होकर अब मैं भविष्य में इसी प्रकार अपने शिक्षण रणनीतियों का सफल कार्यान्वयन करने हेतु प्रतिबद्ध हूं।

सपनों की उड़ान: नेशनल स्पेस डे

अनादी त्रिपाठी, 7ई के छात्र ने एनसीईआरटी ई-पत्रिका के लिए एक लेख लिखा, जिसका विषय था "सपनों की उड़ान: नेशनल स्पेस डे"। लेख ई-पत्रिका में प्रकाशित नहीं हुआ।

सितारों तक पहुँचना: चंद्रयान ने भारत के अंतरिक्ष सपनों को जगाया।

जब मैं तारों से भरे आसमान को देखता हूँ, तो मेरा मन हमारे ग्रह से परे मौजूद अनंत संभावनाओं की ओर भटकता है। भारतीय अंतरिक्ष मिशन, चंद्रयान ने मेरे भीतर आश्चर्य और विस्मय की भावना जगाई है, जो मुझे कल्पना के एक ऐसे क्षेत्र में ले गया है जहाँ अंतरिक्ष और समय की सीमाएँ विलीन हो जाती हैं। इस लेख में, मैं चंद्रयान के महत्व, इसकी उपलब्धियों और सितारों तक पहुँचने के लिए भावी पीढ़ियों को प्रेरित करने पर इसके प्रभाव का पता लगाने की यात्रा पर निकलूँगा।

चंद्रयान ओडिसी

चंद्रयान, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा संचालित चंद्र अन्वेषण मिशनों की एक श्रृंखला है। 2008 में लॉन्च किया गया पहला चंद्रयान मिशन, भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर साबित हुआ, जिससे यह चंद्रमा पर पहुँचने वाला चौथा देश बन गया। मिशन का प्राथमिक उद्देश्य चंद्रमा के भूविज्ञान, संरचना और वायुमंडल पर डेटा एकत्र करना था।

चाँद के रहस्यों का खुलासा

चंद्रयान के उपकरणों और कैमरों ने चाँद की सतह, उप-सतह के बारे में जानकारी का खजाना प्रदान किया है। मिशन के निष्कर्षों ने चाँद के इतिहास पर प्रकाश डाला है, जिसमें चाँद के ध्रुवों पर स्थायी रूप से अंधेरे में रहने वाले क्रेटरों में पानी बर्फ की मौजूदगी का पता चला है। इस अभूतपूर्व खोज का भविष्य के चंद्र मिशनों के लिए महत्वपूर्ण स्थान है, जोकि चंद्रमा पर मानव उपस्थिति की संभावना को दृढ़ करता है।

एक राष्ट्र को प्रेरित करना

चंद्रयान की सफलता ने भारतीयों में अंतरिक्ष अन्वेषण के लिए एक जुनून जगाया है, जो उम्र, लिंग और सामाजिक, आर्थिक बाधाओं को पार करता है। मिशन ने वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और नवोन्मेषकों की एक पीढ़ी को प्रेरित किया है, उन्हें STEM क्षेत्रों में करियर बनाने के लिए प्रेरित किया है। राष्ट्रीय गौरव और उपलब्धि की भावना ने देश को एकजूट किया है, लोगों को एक साथ लाने के लिए अंतरिक्ष अन्वेषण की शक्ति का प्रदर्शन किया है।

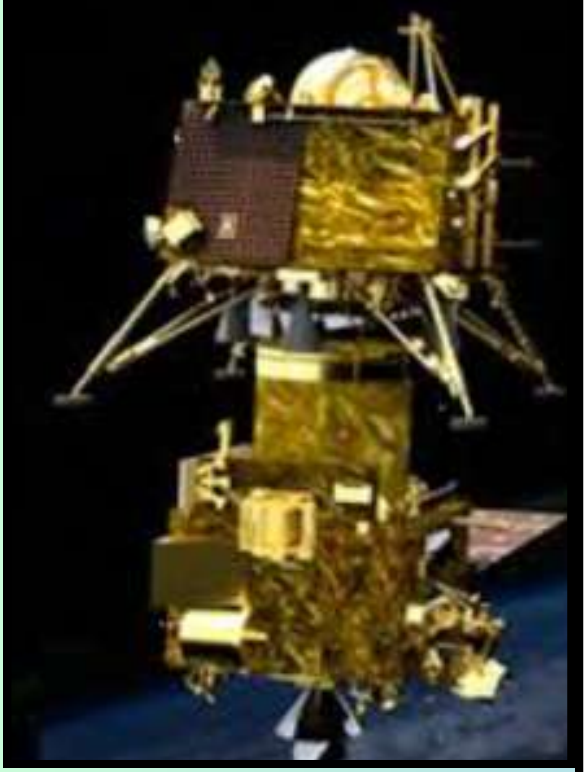

कल्पना की कोई सीमा नहीं होती

जब मैं कल्पना के आकाश में उड़ता हूँ, तो मैं एक ऐसे भविष्य की कल्पना करता हूँ जहाँ भारत अंतरिक्ष अन्वेषण में अग्रणी भूमिका निभाता है। मैं एक ऐसा राष्ट्र देखता हूँ जो अपनी सामूहिक रचनात्मकता, सरलता और संसाधनों का उपयोग अंतरिक्ष यात्रा और खोज की सीमाओं को आगे बढ़ाने के लिए करता है। चंद्रयान ने हमें दिखाया है कि दृढ़ संकल्प और सहयोग से हम असंभव को भी हासिल कर सकते हैं।

निष्कर्ष

चंद्रयान ने न केवल चंद्रमा के बारे में हमारी समझ का विस्तार किया है, बल्कि हमारे भीतर आश्चर्य और जिज्ञासा की भावना भी जगाई है। जैसे-जैसे हम अंतरिख के विशाल विस्तार का अन्वेषण करना जारी रखते हैं, हमें यह याद रखना चाहिए कि चंद्रयान जैसे मिशनों की असली शक्ति हमें प्रेरित करने, शिक्षित करने और एकजूट करने की उनकी क्षमता में निहित है। आइए हम अंतरिक्ष अन्वेषण की भावना को अपनाएँ और साथ मिलकर सितारों तक पहुँचे।

अनादि त्रिपाठी
7–ई
बाल भारती पब्लिक स्कूल, रोहिणी, दिल्ली

हिंदी भाषा हमारी संस्कृति, परंपरा और एकता का प्रतीक है। इसे बढ़ावा देना और संरक्षित करना हम सबकी ज़िम्मेदारी है।

*महात्मा गांधी**
"हिंदी भारत की राष्ट्रीय भाषा है और इसे प्रत्येक भारतीय को आत्मसात करना चाहिए।"

*डॉ. राजेंद्र प्रसाद**
"हिंदी को अपनाना भारत की एकता के लिए अनिवार्य है।"

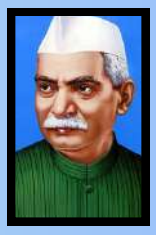

पुरुषोत्तमदास टंडन
"हिंदी हमारी सांस्कृतिक धरोहर और राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान है।"

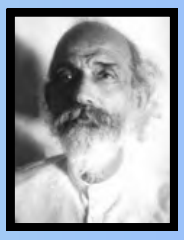

सुभाष चंद्र बोस
"राष्ट्रीयता की भावना को प्रबल बनाने के लिए हिंदी का प्रचार-प्रसार आवश्यक है।"

अटल बिहारी वाजपेयी
"हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं, यह हमारी पहचान है।"*

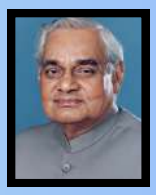

प्रेमचंद
"हिंदी साहित्य का उद्देश्य जीवन को सही दिशा देना और समाज में सुधार लाना है।"

*बाल गंगाधर तिलक**
"स्वराज्य और हिंदी, दोनों भारत की स्वतंत्रता के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।"

CREDITS:

NITYANT GUPTA
8-E

PRITHISH MALHOTRA
8-E

VIHAAN GUPTA
8-E